CYANMAGANTAYELLOWBLACK

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN:2583-4991

भोपाल मंगलवार 07 से 13 नवम्बर 2023 ▸ वर्ष-24 ▸ अंक-24 ▸ पृष्ठ-24 ▸ मूल्य-20 रु. ▸ RNI No. MP HIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र. एम.पी./भोपाल/625/2021-23

CYAN MAGANTA YELLOW BLACK

अलनीनो से बेअसर होगा 2024 का मानसून

अगले साल मानसूनी बारिश अच्छी होने की संभावना

नई दिल्ली। मौसम विभाग ने कहा है कि अगले 2024 मॉनसून सीजन में संभवत: अलनीनो का प्रभाव भारतीय मॉनसून पर नहीं पड़ेगा, हालांकि अभी शुरुआती अनुमान है।

मौसम विभाग के मुताबिक अप्रैल-मई और उसके बाद से इसके 'तटस्थ' होने की संभावना है। मौसम विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने एक वर्चुअल प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, 'इस समय भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर पर मध्यमय अल नीनो की स्थिति है। वहीं हिंद महासागर के ऊपर पॉजिटिव इंडियन ओशन डाईपोल (आईओडी) की स्थिति है। नवीनतम वैश्विक मॉडल पूर्वानुमानों से संकेत मिलता है कि अलनीनो की यह स्थितियां आगामी सीजन में जारी रह सकती हैं और पॉजिटिव आईओडी की स्थिति आगामी महीनों के दौरान कमजोर पड़ सकती हैं। उन्होंने कहा कि मौसम का मौजूदा मॉडल दिखाता है कि अलनीनो अप्रैल और उसके बाद से कमजोर और 'तटस्थ' हो सकता है, हालांकि 6 महीने से ज्यादा पहले अलनीनो का सटीक अनुमान लगाना कठिन है।

प्रशांत महासागर में दक्षिण अमेरिका के हिस्से में पानी के गर्म होने से पैदा अलनीनो मॉनसूनी हवाएं कमजोर करने व भारत में शुष्क मौसम से जुड़ा है। इस साल 2023 में भारत में सामान्य से कम बारिश हुई है और अलनीनो की स्थिति के कारण अगस्त महीने में असामान्य रूप से सूखा रहा है। हालांकि पॉजिटिव आईओडी ने मुसीबतों से कुछ बचाया है।

कृषक दूत के सुधि पाठकों, विज्ञापनदाताओं, लेखकों एवं शुभचिंतकों को धनतेरस एवं दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

दीपावली विशेषांक के मुख्य आकर्षण

गेहूं के लिये सर्वश्रेष्ठ महावीरा जिरोन	5
चने में लगने वाली कीट व्याधियां एवं निवारण	6
एजोला खेती का एक स्थायी रूप	8
लक्ष्मी पूजन की विधि	9
महत्वपूर्ण धनतेरस	10
श्री गणेश पूजा का महत्व	15
दीवाली में कितना महत्वपूर्ण कमल	16
कमल ककड़ी खाने से शरीर में कई फायदे	18
घर पर बनाएं प्राकृतिक कीटनाशक	19

जलीय कृषि फसल बीमा योजना का लाभ पहुंचाने के लिये बैठक आयोजित

नई दिल्ली। मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के मत्स्यपालन विभाग ने वर्तमान में जारी प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत झींगा और मछली पालन के लिए जलीय कृषि फसल बीमा योजना के कार्यान्वयन में पेश आने वाली तकनीकी चुनौतियों पर चर्चा करने और उन्हें समझने के लिए आज झींगा और मछली से संबंधित जलीय कृषि फसल बीमा योजना के बारे में एक बैठक आयोजित की। मत्स्यपालन विभाग के सचिव डॉ. अभिलक्ष लिखी ने इस बैठक की अध्यक्षता की और इसमें मत्स्यपालन विभाग के दोनों संयुक्त सचिवों, सीई, एनएफडीबी, बीमा कंपनियों के वरिष्ठ अधिकारियों तथा वित्तीय सेवाएं विभाग, केन्द्रीय खारा जल जलकृषि संस्थान और विभिन्न राज्यों/केन्द्र-शासित प्रदेश सरकारों के अधिकारियों ने भाग लिया।

डॉ. अभिलक्ष लिखी ने सभी पात्र मछुआरों तक जलीय कृषि फसल बीमा के लाभों को पहुंचाने हेतु सभी हितधारकों से अंतरालों की पहचान करने और ठोस प्रयास करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने हितधारकों द्वारा इस बीमा की अवधारणा को समझने पर भी जोर दिया और इस बीमा योजना को लागू करने हेतु रणनीतिक योजना को अनिवार्य बनाने के लिए सर्वोत्तम प्रबंधन कार्यप्रणालियों के बारे में प्रशिक्षण सत्र आयोजित करने का सुझाव दिया।

एनएफडीबी के सी.ई. डॉ. एल. मूर्ति ने इस बात पर प्रकाश डाला कि एनएफडीबी आंध्र प्रदेश और देश के अन्य हिस्सों के बाढ़ संभावित क्षेत्रों में झींगा एवं मीठे पानी की मछली के लिए प्रायोगिक पैमाने पर बीमा योजना लागू कर रहा है। संयुक्त सचिव (समुद्री मत्स्यपालन) नीतू प्रसाद ने यह सुझाव दिया कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अनुरूप शासकीय संरचना स्थापित करने की दिशा में विचार करना एक महत्वपूर्ण पहलू होगा। संयुक्त सचिव (अंतर्देशीय मत्स्यपालन) सागर मेहरा ने पीएमएमएसवाई के तहत मछली की फसल और झींगा फसल दोनों के लिए जलीय कृषि फसल बीमा से संबंधित एक प्रायोगिक परियोजना के बारे में एक संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की और जलीय कृषि झींगा खेती में अपनाई जा रही सर्वोत्तम प्रबंधन कार्यप्रणालियों पर प्रकाश डाला।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 20/- वार्षिक शुल्क- 600/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

आलसी मनुष्य अपना पुरुषार्थ गंवा देते हैं, जिससे उन्हें कहीं भी सफलता नहीं मिलती। – ऋग्वेद

रबी कृषि आदानों में सतर्कता

किसान भाई इन दिनों रबी फसलों की बुवाई एवं खरीफ फसलों की कटाई-गहाई में व्यस्त हैं। रबी फसलों के लिये कार्तिक का महीना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसीलिये कार्तिक महीने की तुलना तेरह आषाढ़ से की गई है। इस साल प्रदेश के सात-आठ जिलों को छोड़कर अन्य जिलों में पानी की कमी नहीं है। मानसूनी बारिश अच्छी होने से खेतों में पर्याप्त नमी है। साथ ही सिंचाई के सभी छोटे-बड़े स्त्रोत क्षमता अनुसार लबालब हैं। प्रदेश में चालू रबी सीजन में 147 लाख हेक्टेयर में रबी फसलों की बुवाई प्रस्तावित है जिसमें 91 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोये जाने की तैयारी है। प्रदेश के 35 लाख हेक्टेयर धान उत्पादक क्षेत्रों को छोड़कर अन्य क्षेत्रों में किसानों द्वारा रबी फसलों की बुवाई की जा रही है। चना, मसूर, सरसों, धनिया इत्यादि की बुवाई अंतिम चरण में हैं। मालवा-निमाड़ एवं मध्य क्षेत्र के जिलों में गेहूं की बुवाई भी शुरू हो गई है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी यह देखने में आ रहा है कि किसानों के साथ कृषि आदानों की बिक्री में धोखा किया जा रहा है। उर्वरक, कीटनाशक एवं बीज के मामले में विशेष रूप से धोखाधड़ी आम बात है। किसानों में जागरूकता के अभाव से नकली एवं अमानक कृषि आदानों की बिक्री की जाती है। बीजों के मामले में यह गड़बड़ी सर्वाधिक होती है। इस माह प्रदेश में विधानसभा चुनाव होने के कारण समस्त विभागीय अमला चुनाव की तैयारी में व्यस्त है। ऐसे मौके का फायदा उठाकर कृषि आदान प्रदायक कंपनियां एवं विक्रेता सक्रिय हो गये हैं। भोले-भाले किसानों को ठगकर ये किसान विरोधी तत्व अपनी जेबें गरम करने में लगे हैं। किसानों को इस गोरखधंधों से बचाने की जरूरत है। कृषि विभाग एवं स्थानीय प्रशासन को सक्रिय करके नकली एवं अमानक कृषि आदान विक्रय करने वालों के ऊपर सख्त कार्यवाही की जानी चाहिये। यदि ऐसा नहीं किया गया तो किसानों के ऊपर दोहरी मार पड़ेगी। महंगा कृषि आदान खरीदकर उत्पादन हानि किसान बर्दाश्त नहीं कर पायेगा। इसके साथ ही जिन क्षेत्रों में पानी के स्त्रोत भरे हुये हैं वहां पर समय से पानी नहरों के द्वारा छोड़ने का प्रबंध किया जाना चाहिये। बिजली की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की जानी चाहिये ताकि किसान समय से फसलों की सिंचाई कर सकें। सेवा सहकारी समितियों के विक्रय केन्द्रों पर भी उर्वरकों एवं अन्य आदानों की पर्याप्त व्यवस्था किये जाने की आवश्यकता है। किसानों को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि वे कृषि आदान विश्वसनीय संस्था से जांच-परख कर ही खरीदें।

रबी 2023-24 के लिये बीज उपार्जन, विक्रय दर निर्धारित

भोपाल। राज्य शासन द्वारा रबी वर्ष 2023-24 हेतु विभिन्न फसलों के प्रमाणित बीजों के उपार्जन, विक्रय दर एवं प्रमाणित बीज वितरण अनुदान तथा प्रमाणित बीज उत्पादन अनुदान की दरें गत वर्ष अनुसार निर्धारित की गई है। प्रमाणित बीजों की उपार्जन, विक्रय दर निर्धारण।

फसल का नाम	निर्धारित उपार्जन एवं विक्रय दर रूपये प्रति क्विंटल	
	कृषकों के लिए उपार्जन दर (बोनस सहित)	संस्था की सकल विक्रय दर तथा कृषकों को प्राप्त होने वाले बीज की अंतिम दर
गेहूं उंची जाति (10 वर्ष तक की अवधि)	2560	4100
गेहूं उंची जाति (10 वर्ष से अधिक अवधि)	2560	4100
गेहूं बौनी जाति (10 वर्ष तक की अवधि)	2300	3800
गेहूं बौनी जाति (10 वर्ष से अधिक अवधि)	2300	3800
चना (10 वर्ष तक)	5400	7800
चना (10 वर्ष से अधिक)	5400	7800
मटर (10 वर्ष तक)	3300	5100
मटर (10 वर्ष से अधिक)	3300	5100
मसूर (10 वर्ष तक)	6100	8000
मसूर (10 वर्ष से अधिक)	6100	8000
सरसों (15 वर्ष तक)	6200	9100
सरसों (15 वर्ष से अधिक)	6200	9100
अलसी (15 वर्ष तक)	7000	9000
अलसी (15 वर्ष से अधिक)	7000	9000
जौ (10 वर्ष तक)	1900	3500
जौ (10 वर्ष से अधिक)	1900	3500
मूंग ग्रीष्मकालीन (10 वर्ष तक)	8600	10600
मूंग ग्रीष्मकालीन (10 वर्ष से अधिक)	8600	10600
रबी 2023-24 हेतु जैविक बीज की दरें		
1. गेहूं (10 वर्ष तक)	2800	4500
गेहूं (10 वर्ष से अधिक)	2800	4500
2. चना (10 वर्ष तक)	6150	8000
चना (10 वर्ष से अधिक)	6150	8000
3. अलसी (15 वर्ष तक)	8000	10000
अलसी (15 वर्ष से अधिक)	8000	10000

रबी 2023-24 हेतु प्रमाणित बीजों की वितरण अनुदान दर

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (तिलहन फसलों की 15 वर्ष तक की अवधि की किस्मों पर प्रमाणित बीज वितरण अनुदान देय है, राष्ट्रीय खाद सुरक्षा मिशन गेहूं, मोटा अनाज अन्तर्गत (जौ) एवं राष्ट्रीय खाद सुरक्षा मिशन (दलहन) अन्तर्गत दलहनी फसलों की 10 वर्ष तक की अवधि तथा 10 वर्ष से अधिक अवधि की किस्मों पर पृथक-पृथक वितरण अनुदान देय है। अत: निर्धारित सकल विक्रय दरों पर फसलवार प्रमाणित बीज वितरण की दरें निम्नानुसार है।

फसल का नाम	प्रमाणित बीज वितरण अनुदान (रुपये प्रति क्विंटल)
गेहूं उंची जाति (10 वर्ष तक की अवधि)	1000
गेहूं बौनी जाति (10 वर्ष तक की अवधि)	1000
चना (10 वर्ष तक की अवधि)	3300
चना (10 वर्ष से अधिक अवधि)	2500
मसूर (10 वर्ष तक की अवधि वाली किस्मे जो कि 13-14 क्विं. प्रति हे. उपज देती हो जैसे- L-4727, L-4728, L-4729, RVL13-5, RVL13-7, RVL 58, कोटा मसूर-02, कोटा मसूर-03, कोटा मसूर-04, RVL-31, IPL- 316, IPL-534 आदि)	3850
मसूर (10 वर्ष से अधिक अवधि वाली किस्मे जो कि 13-14 क्विं. प्रति हे. उपज देती हो)	2500
सरसों (15 वर्ष तक)	4000
अलसी (15 वर्ष तक)	4000
जौ (10 वर्ष तक)	1750
जौ (10 वर्ष से अधिक)	1500
रबी 2023-24 जैविक	
गेहूं(10 वर्ष तक)	1000
चना (10 वर्ष तक)	3300
चना (10 वर्ष से अधिक)	2500
अलसी (15 वर्ष तक)	4000
अलसी (15 वर्ष से अधिक)	0

क्षय हितग्राहियों को पोषाहार किट वितरित

जबलपुर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर में कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, जबलपुर के द्वारा क्षय हितग्राहियों को पोषाहार किट वितरण कार्यक्रम का आयोजन अधिष्ठाता कृषि अभियांत्रिकी संकाय डॉ. अतुल श्रीवास्तव की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में डॉ. श्रीवास्तव ने कहा कि मध्यप्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल की प्रेरणा से विगत 2017-18 से विश्वविद्यालय परिवार द्वारा प्रारंभ क्षय हितग्राहियों को पोषाहार किट वितरण कार्यक्रम नवाचार के उद्देश्य से लगातार किया जा रहा है। आपने कहा कि टीबी भयानक रोग नहीं है, बल्कि सही देखभाल व इलाज पूरा करवाने से कीटाणु जड़ से खत्म हो सकते हैं। कार्यक्रम में उपस्थित जिला कार्यक्रम समन्वयक सीमांत ढिमोल द्वारा क्षय हितग्राहियों को बेहतर स्वास्थ्य हेतु पोषाहार की महत्वता के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। क्षेत्रीय स्वास्थ्य विजिटर लालता द्वारा समस्त क्षेत्रीय हितग्राहियों में बेहतर पोषाहार उपलब्धता से क्योररेट में इजाफा का तुलानात्मक विश्लेषण दिया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शीला पांडे एवं आभार प्रदर्शन डॉ. प्रीति जैन द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. शीला पांडे, डॉ. सी.एम. एब्रॉल, डॉ. अजय गुप्ता, डॉ. प्रीति जैन उपस्थिति रही। साथ ही कार्यक्रम में समस्त अंतर्विभागीय अधिकारी के साथ-साथ स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी, कर्मचारी सहित अन्य उपस्थित रहे।

अनमोल वचन

निष्ठुर आलोचना और स्वतंत्र विचार ये क्रांतिकारी सोच के दो अहम् लक्षण हैं। – भगत सिंह

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

कार्तिक कृष्ण/शुक्ल पक्ष विक्रम संवत 2080 ईस्वी सन् 2023

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
07 नवम्बर 23	मंगलवार	कार्तिक कृष्ण-10	
08 नवम्बर 23	बुधवार	कार्तिक कृष्ण-10	
09 नवम्बर 23	गुरुवार	कार्तिक कृष्ण-11	रम्भा एकादशी
10 नवम्बर 23	शुक्रवार	कार्तिक कृष्ण-12	प्रदोष व्रत, धनतेरस
11 नवम्बर 23	शनिवार	कार्तिक कृष्ण-13	नरक चतुर्दशी
12 नवम्बर 23	रविवार	कार्तिक कृष्ण-14	दीपावली
13 नवम्बर 23	सोमवार	कार्तिक कृष्ण-30	सोमवती अमावस्या
14 नवम्बर 23	मंगलवार	कार्तिक शुक्ल-01	गोवर्धन पूजा
15 नवम्बर 23	बुधवार	कार्तिक शुक्ल-02	भाई दोज
16 नवम्बर 23	गुरुवार	कार्तिक शुक्ल-03	
17 नवम्बर 23	शुक्रवार	कार्तिक शुक्ल-04	
18 नवम्बर 23	शनिवार	कार्तिक शुक्ल-05	
19 नवम्बर 23	रविवार	कार्तिक शुक्ल-06/07	
20 नवम्बर 23	सोमवार	कार्तिक शुक्ल-08	पंचक 10.41 दिन से

गेहूं की फसल के लिये सर्वश्रेष्ठ महावीरा जिरोन

● प्रमोद कुमार पाण्डेय
हेड एग्रोनामिस्ट
आर.एम. फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स प्रा.लि.
इंदौर (म.प्र.)

खाद्यान्न फसलों में गेहूं की फसल का प्रमुख योगदान है। हमारे देश में गेहूं के कई प्रमुख उत्पादक राज्य हैं जिसमें मध्यप्रदेश का प्रमुख योगदान है। पिछले तीन-चार वर्षों के दौरान मध्यप्रदेश राज्य ने गेहूं के उत्पादन का नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

चालू रबी सीजन में प्रदेश में 91 लाख हेक्टेयर में गेहूं की बुवाई प्रस्तावित है। गेहूं की फसल में किसानों द्वारा भरपूर परिश्रम करने के बावजूद अपेक्षित उत्पादन अभी भी कई क्षेत्र के किसानों द्वारा नहीं लिया जा रहा है। गेहूं की फसल में सही ढंग से पौषक तत्व प्रबंधन नहीं अपनाने से किसानों को हर साल गेहूं की फसल से नुकसान हो रहा है। असंतुलित उर्वरक उपयोग गेहूं का कम उत्पादन मिलने का प्रमुख कारण है। गेहूं से भरपूर उत्पादन पाने के लिये पौषक तत्वों का प्रबंधन अत्यधिक आवश्यक है। राज्य में गेहूं की औसत उत्पादकता 18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है जो राष्ट्रीय औसत (29 क्विंटल प्रति हेक्टेयर) से काफी कम है। प्रदेश में गेहूं उत्पादन की अपार सम्भावनायें हैं। उन्नत किस्मों एवं पौषक तत्व प्रबंधन से उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है बशर्ते पोषक तत्वों का समुचित एवं संतुलित उपयोग किया जाय ताकि उत्तम मृदा स्वास्थ्य बनाये रखते हुए फसल का अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सके। गेहूं अधिक तत्व चाहने वाली फसल है अत: यदि फसल में पौधों को लगातार जब आवश्यकता से कम पोषक तत्व मिलते हैं तो उनमें पोषक तत्वों की कमी के लक्षण प्रकट होने लगते हैं जिस कारण उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

गेहूं में पोषक तत्वों की कमी के लक्षण

गेहूं की फसल में विभिन्न पोषक तत्वों जैसे नत्रजन, फास्फोरस, पोटैशियम, मैगनीज, तांबा, लोहा, सल्फर, कैल्शियम, जिंक एवं बोरान की पौधों में कमी के लक्षण जैसे- ● पौधों का रंग हल्का हरा होना, बढ़वार सामान्य से कम और आकार नुकीला होना। ● कन्सों की संख्या में कमी, तना पतला तथा बालियों का आकार में छोटी होना। ● पत्तियों का रंग गहरा हरा, बैंगनी, अग्रभाग का सूखकर पीला पड़ना। ● पुरानी पत्तियों पर लक्षण का सर्वप्रथम उभरना। ● पत्तियों का अग्रभाग तथा किनारों का सूखना, हरे तीरनुमा मध्य भाग का बना रहना। ● पौधे की धीमी बढ़वार। ● तना पतला और कड़ा होना। ● नई पत्तियों में मध्य भाग में हल्के रंग के धब्बों का बनना जो बाद में पूरी पत्ती में फैल जाते हैं। ● पत्तियों का मध्य भाग में मुड़ जाना तथा गोल हो जाना। ● मुख्य जड़ का सिकुड़ना तथा पार्श्व जड़ों का छोटा होना तथा पास-पास निकलना। ● प्रारंभिक अवस्था में पत्ती आधार से मध्य शिरा और पत्तियों के किनारे के बीच सफेद-पीले धब्बों का बनना तथा बाद में शिराओं के मध्य भाग से हरे रंग की हानि होना फिर पत्तियों के मध्य भाग में सफेद और भूरे रंग के धब्बों का बनना मृत क्षेत्र की वृद्धि तथा बाद में पत्तियों का मुड़ जाना। ● बालियों का देर से निकलना एवं फसल पकने में विलम्ब होना। ● नई पत्तियों में विकृति का आना तथा पत्तियों का फटना। ● पत्तियों के किनारों का आरी के दांतों की तरह कटना एवं कन्सों का पीला पड़ना इत्यादि।

गेहूं में पोषक तत्वों का प्रबंधन

उर्वरक उद्योग की प्रमुख कंपनी आर.एम. फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स प्रायवेट लिमिटेड ने गेहूं की फसल से सर्वश्रेष्ठ गुणवत्तापूर्ण उत्पादन पाने के लिये पौषक तत्व आधारित महावीरा जिरोन सिंगल सुपरफास्फेट उपलब्ध करवाया है। महावीरा जिरोन फाइव इन वन खाद है। इसमें फास्फोरस, कैल्शियम, सल्फर, जिंक एवं बोरोन ऐसे पांच पौषक तत्व हैं जो गेहूं के अत्यधिक गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिये जरूरी है। विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान केन्द्रों ने यह प्रमाणित किया है कि महावीरा जिरोन गेहूं के लिये सर्वश्रेष्ठ खाद है। महावीरा जिरोन में उपलब्ध 16 प्रतिशत फास्फोरस जड़ों की वृद्धि के लिये महत्वपूर्ण है। यह गेहूं के लिये विशेष लाभदायक खाद है। **फास्फोरस** से जड़ें तेजी से विकसित होती हैं, फूल एवं बालियां बनने में तथा उनके पकने में सहायक होता है। **कैल्शियम** जड़ों के विकास एवं पौधे के अंगों की रचना के लिये जरूरी एवं कोशिकाओं का अभिन्न तत्व होने से पौधे में मजबूती प्रदान करता है।

बोरोन के कारण गेहूं के दाने की चमक बढ़ती है एवं नवीन अंगों के निर्माण में मदद करता है। **जिंक** पोटैशियम एवं कैल्शियम अनुपात को नियंत्रित करके फूलों एवं बालियों को गिरने से रोकता है। बालियों का आकार बढ़ाने एवं दानों की संख्या बढ़ाने में मदद करता है। जिंक क्लोरोफिल उत्पाद में सहायक तथा प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया को बढ़ाता है। गेहूं की फसल में महावीरा जिरोन के प्रयोग से दाने की चमक, गुणवत्ता एवं भंडारण क्षमता में वृद्धि होती है। गेहूं की बुवाई के समय तीन बोरी (150 किलोग्राम) महावीरा जिरोन प्रयोग करने से अपेक्षित उत्पादन लिया जा सकता है। अधिक जानकारी के लिये कंपनी के **कस्टमर केयर नंबर 8956926412** से संपर्क किया जा सकता है।

गेहूं की फसल में पोषक तत्वों का प्रबंधन

अनुशंसित उर्वरक की मात्रा-KG 48:24:16 प्रति एकड़

अवधि	महावीरा जिरोन किलो में	MOP किलो में	यूरिया किलो में	सिमट्रॉन किलो में	एमिट्रॉन-L मिली/ली.में	बोरोन ग्राम में	जिंक सल्फेट
बुवाई के समय	150	27	25	4	0	0	0
25-30 दिन बाद	0	0	35	0	0	0	200
50-55 दिन बाद	0	0	30	0	250	250	0
कुल मात्रा KG/ML/GM	150	27	90	4	250	250	250
जल घुलनशील उर्वरक 4-5 ग्राम/लीटर पानी में	25-30 दिन की अवधिमें महावीरा 19:19:19 तथा 45-20 दिन की अवधि में महावीरा 12:61:00 का एक छिड़काव अवश्य करें						

महावीरा जिरोन की कहानी - किसानों की जुबानी

महावीरा जिरोन से गेहूं का अधिकतम उत्पादन

होशंगाबाद। उर्वरक उद्योग की अग्रणी कंपनी आर.एम. फास्फेट्स एण्ड केमिकल्स प्रायवेट लिमिटेड का प्रमुख उत्पाद महावीरा जिरोन सिंगल सुपरफास्फेट किसानों की पहली पसंद बनता जा रहा है। जिन किसानों ने महावीरा जिरोन अपनी गेहूं की फसल में उपयोग किया है वे सभी इसके प्रशंसक बन गये हैं। किसानों के अनुसार महावीरा जिरोन फाइव इन वन खाद है जो गेहूं की फसल को संतुलित पौषक तत्व उपलब्ध करवाता है। महावीरा जिरोन पांच पौषक तत्वों का मिश्रण है जो गेहूं के लिये आवश्यक पौषक तत्व आपूर्ति की गारंटी लेता है। गेहूं की फसल में महावीरा जिरोन के प्रयोग से उत्पादन तो अधिक मिलता ही है साथ ही दाने की चमक बढ़ने से बाजार भाव भी अधिक मिलता है। जिन किसानों ने महावीरा जिरोन गेहूं में उपयोग किया है स्वयं बता रहे हैं इसकी कहानी।

महावीरा जिरोन से कम लागत में अधिक मुनाफा

मैं **कमलेश वर्मा** ग्राम- सिलरी तहसील पिपरिया जिला- होशंगाबाद का रहने वाला हूं। महावीरा जिरोन वास्तव में अद्भुत खाद है। डीएपी की तुलना में यह खाद सस्ता एवं अधिक उत्पादन देने वाला है। धान की फसल में इसका बेहतरीन असर देखकर गेहूं में उपयोग किया। महावीरा जिरोन तीन बैग प्रति एकड़ की दर से प्रयोग किया है साथ में दो बोरी यूरिया भी डाला है। पांच पौषक तत्वों का मिश्रण महावीरा जिरोन में होने के कारण अलग से कोई फास्फेटिक व पोटाशिक उर्वरक प्रयोग नहीं किया। इसके प्रयोग से शुरु से ही गेहूं की बढ़वार बहुत अच्छी है। प्रत्येक पौधों में 10 से 12 कंसे निकल रहे हैं। मुझे विश्वास है कि इस साल महावीरा जिरोन के कारण गेहूं की पैदावार 20 से 25 क्विंटल प्रति एकड़ जरूर मिलेगी। अन्य किसानों को भी महावीरा जिरोन प्रयोग करना चाहिए।

महावीरा जिरोन से मिला चमकदार गेहूं

मैं **शिवनारायण लोधी** ग्राम- सिलारी तहसील पिपरिया जिला-होशंगाबाद का निवासी हूं। मैंने इस साल गेहूं की 10 एकड़ फसल में महावीरा जिरोन 30 बैग उपयोग किया है। पिछले खरीफ में धान में इसका आश्चर्यचकित परिणाम देखकर गेहूं में उपयोग किया है। गेहूं में फूटे कंसों को देखकर ऐसा लग रहा है कि यह एक संतुलित उर्वरक है। गेहूं की पूरी फसल गहरे हरे रंग की दिख रही है। मैंने इस साल डीएपी का उपयोग बिल्कुल नहीं किया। महावीरा जिरोन के अलावा सिर्फ दो बोरी यूरिया प्रति एकड़ डाला है। मैं किसान भाइयों से कहना चाहता हूं कि गेहूं की फसल में महावीरा जिरोन उपयोग करके कम लागत में अधिक मुनाफा कमायें। महावीरा जिरोन गेहूं के लिये सर्वश्रेष्ठ खाद है।

चने में लगने वाली कीट व्याधियां एवं निवारण

● दीपक ठाकुर
एम.एससी. (कीट विज्ञान)
डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू (म.प्र.)

चना की खेती हमारे देश में दलहनी फसलों में अपना प्रमुख स्थान रखती है। चने को दालों का राजा कहा जाता है। पोषक मान की दृष्टि से चने में प्रोटीन लोहा राइबोफ्लेविन तथा नियासिन पाया जाता है। भारत विश्व में सबसे बड़ा चने का उत्पादक देश है।

क्षेत्रफल और उत्पादन दोनों ही दृष्टि में दलहनी फसलों में चने का मुख्य स्थान है। चने की फसल को यदि समय पर नहीं बोया गया तो किसान भाईयों को कीट व्याधि से अधिक नुकसान हो जाता है आज हम इस लेख में इनके नियंत्रण के बारे में जानेंगे।

सबसे पहले आता है बीज उपचार। यदि बीज को ठीक से उपचारित किया जाए तो लगने वाले कीट और रोगों की रोकथाम की जा सकती है। बीज को उपचारित करते समय ध्यान रखना चाहिये कि सर्वप्रथम उसे फफूंदनाशी फिर कीटनाशी तथा अन्त में राजोबियम कल्चर से उपचारित करें। जड़ गलन व उखटा रोग की रोकथाम के लिए बीज को कार्बेन्डाजिम या मैन्कोजेब या थाइरम की 0.5 से 2 ग्राम मात्रा द्वारा प्रति किलोग्राम बीज दर से उपचारित करें।

दीमक एवं अन्य भूमिगत कीटों की रोकथाम हेतु क्लोरोपाइरीफोस 20 ईसी 8 मिलीलीटर मात्रा प्रति किलोग्राम बीज दर से उपचारित करके बुवाई करनी चाहिये। अन्त में बीज को राइजोबियम कल्चर के तीन एवं फास्फोरस घुलनशील जीवाणु के तीन पैकेटों द्वारा एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए आवश्यक बीज की मात्रा को उपचारित करके बुवाई करनी चाहिये। बीज को उपचारित करने लिए एक लीटर पानी में 250 ग्राम गुड़ को गर्म करके ठंडा होने पर उसमें राइजोबियम कल्चर व फास्फोरस घुलनशील जीवाणु को अच्छी प्रकार मिलाकर उसमें बीज उपचारित करना चाहिये। उपचारित बीज को छाया में सूखाकर मैदानी क्षेत्रों में 15 अक्टूबर से नवम्बर का प्रथम सप्ताह तक एवं तराई क्षेत्रों में 15 नवम्बर से पूरे माह तक बुवाई कर देनी चाहिये।

चने की फसल पर लगने वाले कीट व नियंत्रण

फली भेदक: चने की खेती में मुख्य रूप से फली भेदक कीट का प्रकोप अधिक होता है। देर से बुवाई की जाने वाली फसलों में इसका प्रकोप अधिक होता है। यह फूल और हरी फली को खाता है। यह फली में गोल छेद कर दाने को खाकर खाली कर देता है तथा पत्ती से क्लोरोफिल को चूसकर कंकाल की भांति बना देता है।

नियंत्रण: नीम का तेल 12.5 लीटर या नीम के बीज का पाउडर 30 किलो प्रति हेक्टेयर 2 बार में डाले। ट्राइजोफॉस 40 ईसी 780 मिली प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।

कट वर्म: इसकी इल्ली ज्यादातर रात में हानि पहुंचाती है तथा यह पौधे को नीचे से काटकर गिरा देती है।

नियंत्रण: गर्मी में गहरी जुताई करने के बाद अक्टूबर के आखिरी सप्ताह में बुआई कर देना चाहिये। गेहूं, सरसों या अलसी के साथ अन्त:फसल के रूप में लगा सकते हैं। गेंदे को मेढ़ों में लगाए। स्पार्क 36 ईसी 1000 मिली या प्रोफेनोफास 50 ईसी 150 मिली प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें। अंतिम जुताई के समय हेप्टाक्लोर (4 प्रतिशत) या क्यूनालफॉस (1.5 प्रतिशत) या एन्डोसल्फॉन की (1.5 प्रतिशत) चूर्ण की 25 किलोग्राम मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में अच्छी प्रकार मिला देनी चाहिये।

सेमिलूपर: इसका लार्वा पत्ती और फली में बन रहे दाने को नुकसान पहुंचाती है।

नियंत्रण: जल्दी बुवाई व कम अवधि की वेराईटी लगायें। पौध से पौध की दूरी अधिक रखें। लाइट ट्रैप का उपयोग करें। नीम का तेल 2 मिली लीटर प्रति लीटर छिड़काव करें। क्लोरोपायरीफॉस 1.5 प्रतिशत डीपी या कार्बरिल 5 डी का 25 किलो प्रति हेक्टेयर डालें।

दीमक: यह जड़ व तना में छेद करती है जिससे पौधा सूख जाता है।

नियंत्रण: समय पर सिंचाई करें। खेत में पुरानी फसल के अवशेष को साफ कर दें। अच्छे से सड़ी ना हुई गोबर खाद का उपयोग न करें। क्लोरोपायरीफॉस 4 मिली लीटर प्रति किलो से बीज उपचार करें।

चने की फसल पर लगने वाले रोग व रोकथाम

उकठा रोग: चना फसल का यह मुख्य रोग है। इससे फसल की पत्तियों का रंग पीला पड़ जाता है। तना काला पड़ जाता है। यह रोग चने के उत्पादन को लेकर बुरा असर डालता है।

बचाव व रोकथाम: बीजों को बुवाई से पहले थायरम 2.5 ग्राम प्रति किलो से उपचारित कर लेना चाहिए। चने की बुवाई अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में ही करें। चने की खेती हेतु उकठा प्रतिरोधी किस्में जैसे अवरोधी, उदय, पूसा 362, सी-214 इत्यादि का चयन करना चाहिए।

चने की रस्ट अथवा गेरुई: इस बीमारी के भयंकर प्रकोप होने पर रोगी पत्ते मुड़कर सूखने लगते हैं।

बचाव व रोकथाम: 0.2 प्रतिशत मेंकोजेब 75 डब्लूपी का 2 बार से ज्यादा हर 10 दिन बाद छिड़काव कर सकते हैं।

चने का ग्रे मोल्ड रोग: यह चने के खेत में उत्तरजीवी के रूप में रहता है। उपज व दानों की गुणवत्ता दोनों पर बुरा प्रभाव डालता है।

बचाव व रोकथाम: देरी से बुवाई करें। बीजों को बुवाई से पहले थायरम अथवा केप्टान से उपचारित कर लेना चाहिए। खड़ी फसल में 0.2 प्रतिशत बाविस्टीन का छिड़काव करें।

चने का अंगमारी रोग: इस रोग में पौधे पीले पड़कर सूख जाते हैं। इस रोग से प्रभावित पौधे की तने, पत्तियों व फलों पर छोटे-छोटे कत्थई धब्बे पड़ जाते हैं।

बचाव व रोकथाम: चने की अंगमारी प्रतिरोधी किस्म सी-235 उगाना चाहिए। बीजों को बुवाई से पहले थायरम अथवा केप्टान 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर लेना चाहिए।

सरसों-ग्रीष्मकालीन मूंग फसल चक्र उन्नत खेती का बेहतर विकल्प

- **डॉ. प्रशांत सिंह कौरव** (कृषि विस्तार शिक्षा)
- **मोनिका पटेल** (पीएचडी विस्तार शिक्षा)

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

भविष्य में देश की बढ़ती जनसंख्या की पोषक जरूरतों की पूर्ति को ध्यान में रखकर पारंपरिक खेती के बजाय समन्वित व संरक्षित कृषि प्रणाली विकसित करने का प्रयास किया गया है।

आज भारत खाद्यान्न (गेहूं, चावल) क्षेत्र में आत्मनिर्भर है, परन्तु दलहन और तिलहन की ज्यादातर पूर्ति अभी भी विदेशी आयात पर निर्भर है जबकि देश की कृषि भूमि इनके उत्पादन के लिए उपयुक्त है। अत: उन्नत फसल चक्र को अपनाकर तिलहन-दलहन के उत्पादन में भी सकारात्मक वृद्धि लाई जा सकती है।

भूमि का चुनाव एवं भूमि की तैयारी

सरसों-ग्रीष्मकालीन मूंग फसल चक्र हेतु दोमट या बलुई भूमि जिसमें जल की निकासी अच्छी हो, अधिक उपयुक्त होती है। अच्छी पैदावार के लिए जमीन का पी.एच. 6.5-7.5 होना चाहिए। सिंचित क्षेत्रों में खरीफ फसल के बाद पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से और उसके बाद दो-तीन जुताईयां तवेदार हल से करनी चाहिए। अगर बोनी से पूर्व भूमि में नमी की कमी है तो खेत में पलेवा (हल्की सिंचाई) करना चाहिए। बोनी से पूर्व खेत खरपतवार रहित होना चाहिए। अंतिम जुताई के समय 1.5 प्रतिशत क्यूनॉलफॉस 25 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में मिला देने से भूमिगत कीड़ों की रोकथाम की जा सकती है।

उन्नत किस्मों का चुनाव एवं बीजदर

मध्यप्रदेश में अधिक उपज प्राप्त करने हेतु सरसों, मूंग की निम्न जातियों की बुबाई हेतु अनुशंसा की जाती है। सामान्यत: सरसों की बीजदर 4.5-5 किग्रा प्रति हेक्टेयर एवं ग्रीष्मकालीन मूंग हेतु 25-30 किग्रा प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता पड़ती है।

आसिता से बचाव हेतु मेटालेक्जिल (एप्रन एस डी-35) 6 ग्राम एवं तना सड़न या तना गलन रोग से बचाव हेतु कार्बेन्डाजिम 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीज उपचार करना चाहिए।

ग्रीष्मकालीन मूंग: बुआई से पहले बीजों को थीरम या कैप्टान 2 से 3 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। यदि खेत में पहली बार फसल ली गई है तो बीजों को उपयुक्त राइजोबियम कल्चर की 5 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना भी वांछनीय है।

बोने की विधि

सरसों: बुवाई सीड ड्रिल से कतारों में करें। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 से.मी., पौधे से पौधे की दूरी 10-12 सेमी एवं बीज को 2-3 से.मी. से अधिक गहरा न बोयें। अधिक गहरा बोने पर बीज के अंकुरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

ग्रीष्मकालीन मूंग: मूंग के लिए कतार से कतार की दूरी 20-22.5 से.मी. रखी जाती है। पौधे से पौधे की दूरी 10-15 से.मी. रखते हुये 4 से.मी. की गहराई पर बोना चाहिये।

किस्में	पकने की अवधि	उपज	मुख्य विशेषताएं
सरसों			
जवाहर सरसों-2	135-138 दिन	18-20 क्विं/हे.	मृदुरोमिल आसिता रोग व पाला के प्रति सहनशील एवं मृदुरोमिल आसिता के प्रति प्रतिरोधकता।
जवाहर सरसों-3	130-132 दिन	18-20 क्विं/हे.	झुलसन रोग एवं माहू का प्रकोप कम होता है।
तारक	120-125 दिन	20-22 क्विं/हे.	अधिक उत्पादन, सफेद फफोला, तना सड़न के प्रति प्रतिरोधकता। बीजों में 40 प्रतिशत तेल होता है।
पूसा सरसों-27	108-135 दिन	15-17 क्विं/हे.	उच्च तापमान एवं अगेती बोनी हेतु उपयुक्त।
माया	125-136 दिन	18-20 क्विं/हे.	अगेती बोनी एवं उच्च तापमान के प्रति सहनशील, सफेद किट्ट के प्रति प्रतिरोधी।
ग्रीष्मकालीन मूंग			
टी.जे.एम -3	60-70 दिन	10-12 क्विं/हे.	ग्रीष्म लिए उपयुक्त, फलियां गुच्छों में लगती हैं। पीला मोजेक एवं पाउडरी मिल्ड्यू रोग हेतु प्रतिरोधक
जवाहर मूंग-721	70-75 दिन	12-14 क्विं/हे.	ग्रीष्म के लिये उपयुक्त, पौधे की उंचाई 53-65 सेमी, पीला मोजेक एवं पाउडरी मिल्ड्यू रोग सहनशील
पूसा विशाल	60-65 दिन	12-14 क्विं/हे.	ग्रीष्म के लिये उपयुक्त, पौधे मध्यम आकार के (55-70 सेमी.), पीला मोजेक रोग सहनशील
के- 851	60-65 दिन	8-10 क्विं/हे.	पौधे मध्यम आकार के (60-65 सेमी.), एक पौधे में 50-60 फलियां, एक फली में 10-12 दाने, दाना बड़ा
टी.जे.एम -3	60-70 दिन	10-12 क्विं/हे.	ग्रीष्म लिए उपयुक्त, फलियां गुच्छो में लगती है, पीला मोजेक एवं पाउडरी मिल्ड्यू रोग हेतु प्रतिरोधक

बीजोपचार

सरसों: भरपूर पैदावार हेतु फसल को बीज जनित बीमारियों से बचाने के लिये बीजोपचार आवश्यक है। श्वेत किट्ट एवं मृदुरोमिल

सिंचाई, खाद एवं उर्वरक की मात्रा

सरसों: सिंचित अवस्था में पलेवा देकर बोनी की जाती है, वहां पर पहली सिंचाई फसल की बुवाई के 40-45 दिन पर व दूसरी सिंचाई मावठा न होने पर 75-80 दिन पर करना चाहिए। सिंचाई जल की गहराई 6-7 से.मी. से ज्यादा नहीं होना चाहिए।

ग्रीष्मकालीन मूंग: ग्रीष्म ऋतु में 10-15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई की आवश्यकता होती है। फसल पकने के 15 दिन पूर्व सिंचाई बंद कर देना चाहिये।

- सरसों में गंधक तत्व आवश्यक है। जिसकी पूर्ति अमोनियम सल्फेट, सुपर फास्फेट, अमोनियम फास्फेट सल्फेट आदि उर्वरकों के उपयोग से की जा सकती है।

फसल	उर्वरक (कि.ग्रा./हेक्टेयर)				
	नत्रजन	फास्फोरस	पोटाश	गंधक	जिंक
सरसों	100	50	25	40	-
ग्रीष्म मूंग	20	40	20	25	20

- मूंग में नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश उर्वरकों की पूरी मात्रा बुवाई के समय 5-10 सेमी गहरी कूड़ में आधार खाद के रूप में दें।

पौध संरक्षण

सरसों-ग्रीष्मकालीन मूंग फसल चक्र में अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु विभिन्न खरपतवार, रोग तथा कीट से फसल की सुरक्षा करना अत्यंत आवश्यक होता है। इसके लिए विभिन्न कर्षण, यांत्रिक जैविक क्रियाविधि अपनाकर पौध संरक्षण किया जा सकता है, साथ ही यदि आवश्यक हो और कीट-रोग के अधिक प्रकोप की अवस्था में रासायनिक नियंत्रण करना आवश्यक है।

कटाई एवं गहाई

सरसों: फसल 100 से 130 दिन में तैयार होती है। जब 75 प्रतिशत फलियां पीली पड़ जाती हैं तब सरसों की फसल की कटाई कर लेनी चाहिए। सरसों कटाई सामान्यता दरांती से की जाती है। इन फसलों की कटाई ट्रैक्टर चलित हार्वेस्टर, कम्बाइन हार्वेस्टर अथवा रीपर की सहायता से की जाती है। कुछ दिनों तक धूप में रखने के लिए सूखे स्थान पर रख दिया जाता है, ताकि फसल अपना प्राकृतिक रंग प्राप्त कर लें और बीजों में नमी 20 प्रतिशत से कम पहुँच जाये।

ग्रीष्मकालीन मूंग: फसल क्रमश: 65-70 दिन में पक जाती है। फलियां पककर हल्के भूरे रंग की अथवा काली होने पर कटाई योग्य हो जाती है। पौधे में फलियां असमान रूप से पकती हैं। यदि पौधे की सभी फलियों के पकने की प्रतीक्षा की जाये तो ज्यादा पकी हुई फलियां चटकने लगती हैं। अत: काटकर खेत में सुखाने के उपरान्त थ्रेसिंग हेतु थ्रेसर का उपयोग कर गहाई कार्य किया जा सकता है।

सरसों-ग्रीष्मकालीन मूंग फसल चक्र के लाभ

- सरसों (समर्थन मूल्य 5650), मूंग (समर्थन मूल्य 8,558 रु) का अन्य फसलों की तुलना में अधिक बाजार मूल्य प्राप्त होता है।
- संरक्षित खेती को बढ़ावा मिलता है। संरक्षित खेती द्वारा खेती में कीट पतंगों एवं रोगों का प्रकोप आमतौर पर कम दिखाई देता है।
- लागत कम होने से अधिक लाभ प्राप्त होता है, साथ ही रबी एवं ग्रीष्म ऋतु में उत्पादन प्राप्त होता है।
- तिलहन दलहन के उत्पादन में वृद्धि होने से खाद्य तेलों एवं दालों के विदेशी आयात पर निर्भरता कम होती है।
- फसल विविधीकरण को बढ़ावा मिलता है जिससे मृदा स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

● कृष्ण शंकर त्रिपाठी ● काजोल गौतम
शोध विद्यार्थी, कृषि विभाग
● अंकिता शर्मा, सहायक प्रोफेसर
(अतिथि संकाय) बागवानी विभाग
कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, जे.एन.के.वी.वी.,
जबलपुर (म.प्र.)

एजोला खेती का एक स्थायी रूप

हरे पौधों को लंबे समय से सबसे सस्ते और सबसे अधिक के रूप में मान्यता दी गई है। उनकी संश्लेषण क्षमता के कारण प्रोटीन का प्रचुर संभावित स्रोतअमीनो एसिड वस्तुतः असीमित और आसानी से उपलब्ध की एक विस्तृत श्रृंखला से प्राथमिक सामग्री।

एजोला ताजा पानी का फर्न है जो एजोलासी परिवार से संबंधित है। इसे उगाना आसान है और अत्यधिक उत्पादक है। एनाबीना की उपस्थिति के कारण यह वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर कर सकता है। एजोला को चावल के खेत में क्लासिक उर्वरक के रूप में लगाया गया है। प्रोटीन का यह एक अच्छा स्रोत है और इसमें लगभग सभी आवश्यक अमीनो एसिड और खनिज होते हैं। फाइटोरेमीडिएटर के रूप में एजोला की क्षमता निर्धारित करने के लिए किया गया और अभी भी जारी है। एक स्थायी जैव ऊर्जा स्रोत के रूप में उपयोग किया जाता है।

एजोला को आमतौर पर मच्छर फर्न, डकवीड फर्न, फेयरी मॉस और वॉटर फर्न के रूप में जाना जाता है। यह एशिया, अफ्रीका और अमेरिका का मूल निवासी एक छोटा, स्वतंत्र रूप से तैरता हुआ जलीय फर्न है। यह दलदलों, खाइयों और यहां तक कि झीलों और नदियों में भी उगता है जहां पानी अशांत नहीं होता है। एजोला एक स्वतंत्र रूप से तैरने वाला, पानी की सतह पर तेजी से बढ़ने वाला जलीय फर्न है। अजोला नाम दो ग्रीक शब्दों अज़ो (सूखने के लिए) और ओलियो (मारने के लिए) से लिया गया है। इस प्रकार यह दर्शाता है कि सूखे से फर्न मारा जाता है। एजोला-अनाबेना एक सहजीवी परिसर है जिसमें एंडोफाइटिक ब्लू-ग्रीन शैवाल अनाबेना जोल्ला, पानी फर्न एजोला (स्पद) के पत्ती गुहाओं के भीतर रहता है। एंडोसिम्बियन्ट, जो नाइट्रोजन फिक्सिंग है, अपने और अपने मेजबान दोनों के लिए पर्याप्त नाइट्रोजन प्रदान करता है। दूसरी ओर फर्न, शैवाल के लिए एक संरक्षित वातावरण प्रदान करता है और एक निश्चित कार्बन स्रोत के साथ इसकी आपूर्ति भी करता है। इसमें वायुमंडलीय नाइट्रोजन को ठीक करने के साथ-साथ बहुत अधिक दर पर बायोमास का उत्पादन करने की क्षमता है। दुनिया भर में अज़ोला की कम से कम आठ प्रजातियाँ हैं। कैरोलिनियाना, सर्किनटा, जपोनिका, मेक्सिको, माइक्रोफिला, निलोटिका, पिनाटा और रूब्राण। इसलिए अज़ोला को सुपर प्लांट कहा जा सकता है क्योंकि यह पशुधन उत्पादन (रॉय एट अल) को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण है। अजोला सांद्रता, चारा, फीड का एक उत्कृष्ट विकल्प है, जिससे पशुधन के लिए एक स्थायी फीड प्रदान किया जाता है। इसमें अधिकांश पोषक तत्व होते हैं जो मुर्गी और मछली सहित पशुधन के सभी वर्गों के लिए आवश्यक होते हैं। अज़ोला को बिना किसी प्रतिकूल प्रभाव के इन जानवरों को खिलाया जा सकता है। अज़ोला का उपयोग गैर-जुगाली करने वालों के लिए एक अपरंपरागत उच्च संभावित फीड संसाधन के रूप में किया जा सकता है। अज़ोला का उपयोग मवेशियों, भेड़, बकरियों, सूअरों, खरगोशों और मछलियों के लिए फीड के एक आदर्श स्रोत के रूप में किया जा सकता है जो एक सांद्रता, फीड के वैकल्पिक स्रोत के रूप में है। पशुओं की उत्पादन स्थिति में सुधार के लिए चारा अज़ोला प्रोटीन, आवश्यक अमीनो एसिड, विटामिन (विटामिन ए, विटामिन बी 12, बीटा कैरोटीन) विकास प्रवर्तक बिचौलियों और कैल्शियम, फॉस्फोरस, पोटेशियम, लौह, तांबा सहित खनिजों में बहुत समृद्ध है। मैग्नीशियम (भट्ट एट अलण् 2020)। अजोला डेयरी मवेशियों के लिए उत्पादन, दूध, मांस आदि के मामले में दक्षता में सुधार के लिए एक मूल्यवान ग्रीन फीड सप्लीमेंट के रूप में कार्य कर सकता है, विशेष रूप से जहां हरे चारे की उपलब्धता सीमित है। अजोला आधार स्टेम और पत्तियों के साथ एक लंबा, गोलाकार और त्रिकोणीय प्रतीत होता है। पत्ती में दो लोब होते हैं एक क्लोरोफिलस एरियल पृष्ठीय लोब और एक उदर लोब जो आंशिक रूप से पानी में डूबा होता है। प्रत्येक पृष्ठीय लोब में एक पत्ती नहर होती है, जो सहजीवी अनाबेना अज़ोला रखती है। संयंत्र सुपर-कुशल है जिसमें 7 दिनों में अपना वजन दोगुना करने की क्षमता है। यह प्रति वर्ष नौ टन प्रोटीन प्रति हेक्टेयर तालाब का उत्पादन कर सकता है। प्रयोगशाला परिस्थितियों में, अज़ोला को दो दिनों से कम समय में और सामान्य क्षेत्र की स्थितियों में 3-5 दिनों और 5-10 दिनों के भीतर अनुकूल क्षेत्र की स्थितियों में लगभग डबल बायोमास करने में सक्षम होने की सूचना मिली है। अजोला जिसमें 20-35 प्रतिशत प्रोटीन, 10.15 प्रतिशत खनिज और 7.10 प्रतिशत अमीनो एसिड, बायोएक्टिव पदार्थ और बायोपोलिमर शामिल हैं जो सूखे वजन के आधार पर होते हैं। अजोला में अपेक्षाकृत कम कार्बोहाइड्रेट सामग्री के साथ-साथ तेल सामग्री भी होती है। हालांकि अजोला को इसकी उच्च प्रोटीन सामग्री और कम लिग्निन सामग्री के कारण पशुधन द्वारा जल्दी से पचाया जा सकता है। (चौधरी एट अल, 2020)

अजोला की खेती की प्रथा

पिल्लई एट अल (2002) ने सिलपॉलिन शीट्स से निर्मित कृत्रिम पानी के टैंकों में NARDEP प्रणाली द्वारा अज़ोला की खेती का उल्लेख किया। पहले स्तर के रूप में 2 मीटर X 2 मीटर X 0.2 मीटर का एक गड्ढा खोदा गया था। सिलपॉलिन शीट फैली हुई थी और लगभग 10-15 किलो छलनी उपजाऊ मिट्टी समान रूप से सिलपॉलिन शीट पर फैली हुई थी। 10 लीटर पानी में 2 किलो गाय के गोबर और 30 ग्राम सुपर फॉस्फेट से युक्त घोल को पैड पर डाला गया। अज़ोला को तेजी से गुणा करने की प्रक्रिया में रखने के लिए हर 5 दिनों में एक बार 20 ग्राम सुपर फॉस्फेट और लगभग 1 किलो गाय के गोबर का मिश्रण जोड़ा जाना चाहिए। जल स्तर को लगभग 10 सेमी तक पहुंचाने के लिए अधिक पानी डंप किया गया था। लगभग 0.5-1 किलोग्राम नई और शुद्ध अजोला संस्कृति को गड्ढे में डाला गया था। अज़ोला तेजी से विस्तार करेगा, 10-15 दिनों के भीतर गड्ढे को भर देगा। उसके बाद हर दिन लगभग 500-600 ग्राम अजोला काटा जा सकता है।

भट्ट एट अल (2020) ने अजोला की खेती की एनडीआरआई पद्धति का प्रदर्शन किया। यहां पहले आकार 10X4 फीट (एल बी) और 90 सेमी गहराई का एक आयताकार गड्ढा तैयार किया गया था। फिर गड्ढों को सिलपॉलिन की चादरों से ढक दिया गया और गड्ढे की सतह को एक समान बना दिया गया। चादरों के किनारों को ईंटों और कीचड़ से तय किया गया था। बाद में गड्ढे को 25-30 किलोग्राम महीन छलनी वाली उपजाऊ मिट्टी के साथ कवर किया गयाए जो कि कार्बोफ्यूरान के साथ मिश्रित थी/मिट्टी के कुल वजन का 1 प्रतिशत और सतह पर समान रूप से फैल गया। फिर पानी को 25-30 सेमी की ऊंचाई तक गड्ढे में स्थानांतरित किया गया था। लगभग 6-7 किलो गाय के गोबर (1-2 दिन) की घोल तैयार की गई और गड्ढे में डाल दी गई। एसएसपी प्रत्येक टैंक पर/20-25 ग्राम फैला हुआ था। तार जाल की मदद से सतह पर किसी भी विदेशी जड़ और अवांछित सामग्री को हटा दिया जाता है। अंत में शुद्ध ताजा अज़ोला संस्कृति सतह पर/300-400 ग्राम प्रति एम 2 टीका है। तेजी से विकास को बनाए रखने के लिएए प्रत्येक 10 वें दिन के अंतराल पर लगभग 10 ग्राम की गाय घोल (1-2 किग्रा) और एसएसपी डाली गई। 25 से 30 प्रतिशत गड्ढे में नाइट्रोजन के निर्माण को रोकने के लिए पानी को हर 15 दिनों में एक बार ताजे पानी से बदलना था। गड्ढे को रात के समय लंबी प्लास्टिक पॉलीथीन शीट से ढंका गया था और हर सुबह 9 बजे के आसपास हटा दिया गया था। इस पद्धति ने अजोला विकास के लिए बहुत मदद की और इसे ठंडे तनाव और ओस से रोका।

अज़ोला की खेती के दौरान महत्वपूर्ण सावधानियों पर विचार किया जाना

- प्रत्यक्ष सूर्य के प्रकाश से दूर एक जगह को चुना जाना चाहिए जो अधिमानतः एक छायादार क्षेत्र है।
- अच्छी वृद्धि के लिए तापमान एक महत्वपूर्ण कारक है। अधिकतम वृद्धि के लिए 25-35 डिग्री सेल्सियस का औसत तापमान सबसे अधिक अनुकूल है।
- गड्ढे का स्तर जमीन के साथ-साथ पूरे गड्ढे में समान जल स्तर बनाए रखने के लिए समान होना चाहिए।
- अजोला जैव द्रव्यमान / 300-360 ग्राम प्रति वर्ग मीटर को अधिक भीड़ को रोकने और तेजी से विकास के पक्ष में दैनिक रूप से हटाया जाना चाहिए।
- कीट के विकास को रोकने के लिए एक उपयुक्त कीटनाशक जैसे नीम का तेल डाला जाना चाहिए।
- एसएसपी सबसे महत्वपूर्ण मिश्रण है और 10वें दिन के अंतराल पर प्रत्येक टैंक पर / 10-20 ग्राम की आपूर्ति की जानी चाहिए।
- गड्ढे में अतिरिक्त नाइट्रोजन उत्पादन को रोकने के लिए हर 15 दिनों में औसतन लगभग 25 से 30 प्रतिशत पानी को ताजे पानी से बदलना पड़ता है।
- किसी भी विदेशी जड़ और अवांछित सामग्री को नियमित रूप से हटाया जाना चाहिए। (रॉय एट अल. 2016)

अजोला खेती के लाभ

- यह थोड़े समय के भीतर अपने बायोमास को दोगुना करने और पूरे वर्ष हरी खाद बनाने की क्षमता रखता है।
- अजोला चावल की खेती में एक प्रभावी जैव उर्वरक हो सकता है। अजोला की तेजी से प्रसार दर और तेजी से अपघटन क्षमता एक हरे रंग की खाद सह जैव उर्वरक के रूप में चावल के खेतों में उपयोग के लिए एक महत्वपूर्ण महत्वपूर्ण विचार बन गया है।
- 1:0:4 के अनुपात में मिश्रित गाय के गोबर और अजोला के अवशेषों ने अकेले गाय के गोबर का 1.4 गुना गैस उत्पादन दिया।
- अजोला चटाई ने खरपतवारों की कुल मात्रा को काफी कम कर दिया। विशेष रूप से घास और हेजेज के माध्यम से प्रमुख खरपतवार मोनोकोरिया योनि को हमेशा नियंत्रित नहीं किया जा सकता है।
- अजोला जलपक्षी, मछली, झींगा, कीड़े, घोंघे, क्रस्टेशियंस आदि के लिए एक खाद्य स्रोत है और उन्हें निवास प्रदान करता है।
- अजोला उपस्थिति इन पौधों को पोषक तत्वों की उपलब्धता को सीमित करके साल्विनिया और जल जलकुंभी सहित विदेशी जलीय पौधों की वृद्धि को भी प्रतिबंधित कर सकती है।
- अजोला ने पौधे के विकास नियामकों और विटामिनों को जारी किया जो धान की वृद्धि को बढ़ाने के लिए आवश्यक हैं (ब्रूवर, 2017)
- अजोला पानी की सतह से वाष्पीकरण को कम करता है और चावल में पानी के उपयोग की दक्षता बढ़ाता है। (शेष पृष्ठ 20 पर)

लक्ष्मी पूजन की विधि

आसन पर लक्ष्मी-गणेश को रखें। देवी के आगे सिक्के, गल्ला, बही खाते, नया खाता रखें। देवी को सूखा धनिया, गुड़, बताशे, चावल (लावा) का भोग शुभ माना जाता है। लक्ष्मी के साथ सरस्वती और कुबेर भी होते हैं।

पूजन विधि : अपने ऊपर, आसन और पूजन सामग्री पर 3-3 बार कुशा या पुष्पादि से छिड़काव कर यह शुद्धिकरण मंत्र पढ़ें-

ॐ अपवित्र: पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
य: स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यंतर शुचि:।।

यह मंत्र पढ़ते हुये आचमन करें और हाथ धोएं...

ॐ केशवाय नम:, ॐ माधवाय नम:, ॐ नारायणाय नम:

पुन: आसन शुद्धि मंत्र बोलें-

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुनाधृता।
त्वं च धारयमां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

अनामिका अंगुली से चंदन/रोली लगाते हुये यह मंत्र पढ़ें-

चन्दनस्य महात्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम्,
आपदां हस्ते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठतु सर्वदा।

कलश पूजा

कलश में सिक्का, सुपारी, दुर्वा, अक्षत, तुलसी पत्र और जल भरकर कलश पर आम पल्लव रखें। नारियल पर वस्त्र लपेटकर कलश पर रखें।

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर वरुण देवता का आह्वान मंत्र पढ़ें-

आगच्छ भगवान देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत् पूजा समप्ती तावत्वं सुस्थीरो भव।।

श्री गणेश पूजा

पहले गणेश जी की पूजा इस मंत्र से करें।
गजाननम्भूतगणादिसेवितं कपित्थ जम्बू फलचारूभक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम्।।

हाथ में अक्षत लेकर आवाहन मंत्र का जाप करें

ॐ गणपतये इहागच्छ इह तिष्ठ।।

अक्षत पात्र में अक्षत छोड़ें। गणेश जी को प्रसाद चढ़ायें। पान सुपारी, फूल अर्पित करें। कलश पूजन के बाद सभी कुबेर, इंद्र सहित सभी देवी-देवताओं का स्मरण करें।

मां लक्ष्मी का ध्यान करें और मूल मंत्र पढ़ें-

लक्ष्मी पूजन विधि मंत्र

ॐ श्री महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्नै च धीमती तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् ॐ।।

अब हाथ में अक्षत लेकर बोलें

ॐ भूर्भुव: स्व: महालक्ष्मी, इहागच्छ इह तिष्ठ, एतानि पाद्याद्याचमनीय-स्नानीयं, पुनराचमनीयम्।

स्नान करायें और वस्त्र अर्पित करें

प्रतिष्ठा के बाद स्नान करायें, चंदन लगायें। पुष्प चढ़ायें और माला पहनायें। दूध, शक्कर और सूखे मेवों का भोग लगायें। इदं रक्त वस्त्र समर्पयामि कहकर लाल वस्त्र पहनायें। फिर मां लक्ष्मी को प्रसाद अर्पित करें। पान, सुपारी चढ़ायें। मां लक्ष्मी श्रीसूक्त के 16 मंत्रों का पाठ करें।

मां सरस्वती का ध्यान करें और यह मूल मंत्र पढ़ें-

ॐ ब्रह्म पत्नीच विद्महे महावाण्यैच
धीमती तन्न: सरस्वती प्रचोदयात।।

फिर पुष्प अर्पित करते हुये मंत्र पढ़ें-

ॐ महालक्ष्मयै नम:

लक्ष्मी पूजन के बाद भगवान विष्णु का ध्यान करें।
ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च,
जगदिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नम:।
अब पूजन के बाद क्षमा प्रार्थना और आरती करें।
आवाहनं न जानामि, न जानामि तबार्चनम।
पूजं चैव न जानामि, क्षम्यताम् परमेश्वरं।।

दिवाली लक्ष्मी पूजा शुभ मुहूर्त

नरक चतुर्दशी- 11 नवम्बर, दिन शनिवार
कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि- 12 नवम्बर शाम 06.04 से 12 नवम्बर शाम 05.28 मिनट तक
कृष्ण पक्ष की अमावस्या- 12 नवम्बर दोपहर 02.44 से 13 नवम्बर दोपहर 02.56 मिनट तक
लक्ष्मी पूजा मुहूर्त- 12 नवम्बर शाम 05.40 से रात 07.36 तक
अभिजीत मुहूर्त- 12 नवम्बर दोपहर 12.00 से दोपहर 12.45 तक
विजय मुहूर्त- 12 नवम्बर दोपहर 02.15 से 03.00 तक
गोवर्धन पूजा- 14 नवम्बर, दिन मंगलवार
भाई दूज- 15 नवम्बर, दिन बुधवार

पांच दिवसीय दीवाली का महत्व

दीपावली सप्ताह का पहला दिन : धनतेरस

धनतेरस (धन्वंतरि त्रयोदशी) दीपावली सप्ताह का पहला दिन है, जो दीपावली उत्सव की शुरुआत का प्रतीक है। दरअसल, यह हिंदू कैलेंडर के अनुसार कृष्ण पक्ष का 13वां चंद्र दिन है, जो कार्तिक महीने का अंधेरा पखवाड़ा है।

धनतेरस एक विशेष दिन है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि भगवान धन्वंतरि इस दिन समुद्र से मानव जाति की भलाई के लिए आयुर्वेद, जो एक चिकित्सा विज्ञान माना जाता है, लेकर आए थे। इस दिन बड़ी संख्या में खरीदारी होती है, विशेष रूप से सोना, चांदी, कीमती पत्थर, गहने, नए कपड़े और बर्तन।

सूर्यास्त के समय हिंदू स्नान करते हैं और मृत्यु के देवता यमराज की सुरक्षा के लिए एक प्रज्वलित दीपक और प्रसाद (पूजा के दौरान दी जाने वाली मिठाई) के साथ प्रार्थना करते हैं। यह प्रसाद तुलसी के पेड़, पवित्र तुलसी या आंगन में किसी भी पवित्र पेड़ के पास रखा जाता है।

दीपावली का दूसरा दिन : छोटी दीपावली

काली चौदस या नरक चतुर्दशी, दीपावली सप्ताह के दूसरे दिन के रूप में जानी जाती है। इसे छोटी दीपावली भी कहते हैं। भारत के कुछ हिस्सों में दीपावली के दूसरे दिन मनाया जाता है यह त्योहार। ऐसा माना जाता है कि भगवान कृष्ण ने इस दिन दुनिया को आतंक से मुक्त करने के लिए नरकासुर राक्षस का वध किया था। ऐसा माना जाता है कि इस दिन वर्ष भर की थकान को दूर करने के लिए शरीर पर तेल से मालिश करके स्नान करना चाहिए ताकि दीपावली को जोश और करुणा के साथ मनाया जा सके। यह भी माना जाता है कि इस दिन आपको दीया नहीं जलाना चाहिए या अपने घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। हालांकि आधुनिक समय में छोटी दीपावली पर लोग 'एक खुशहाल, सफल दीपावली' की कामना करने के लिए एक-दूसरे के पास जाते हैं और उपहारों और मिठाइयों का आदान-प्रदान करते हैं।

दीपावली सप्ताह का तीसरा दिन : वास्तविक दीपावली दिवस

असली दीपावली, दीपावली के 5 दिनों के उत्सव में तीसरे दिन होती है। यह वह दिन है जब देवी लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा की जाती है। हिंदू शुद्ध होकर अपने परिवार और पंडित (पुजारी) के साथ मिलकर देवी लक्ष्मी की पूजा करते हैं, ताकि समृद्धि और धन का आशीर्वाद, बुराई पर अच्छाई की जीत और अंधेरे पर प्रकाश की जीत हो। लोग अपने घरों में दीये और मोमबत्तियां जलाते हैं और पूरे भारत में लाखों पटाखे जलाए जाते हैं और सड़कों पर रंग-बिरंगी रोशनियां की जाती हैं।

दीपावली सप्ताह का चौथा दिन : दीपावली के बाद विश्वकर्मा पूजा

दीपावली पर्व के पांच दिनों में से चौथा दिन भारत में अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। इस दिन को गुजरात जैसे पश्चिमी राज्य में अपने कैलेंडर के अनुसार नए वर्ष, बेस्टू वरस, के रूप में धूमधाम से मनाया जाता है।

उत्तरी भारतीय राज्यों में इस दिन लोग अपने उपकरणों और हथियारों की पूजा करते हैं, आमतौर पर गोवर्धन पूजा के दिन विश्वकर्मा पूजा भी होती है। इस दिन सभी व्यवसाय बंद रहते हैं। इस दिन को अन्नकूट के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान कृष्ण कई हजार साल पहले ब्रज के लोगों को गोवर्धन पूजा में लाए थे। तब से हर साल ब्रज लोगों की पहली पूजा के सम्मान में गोवर्धन की पूजा करते हैं।

दीपावली सप्ताह का 5 वां दिन : भाई दूज

दीपावली के 5 दिनों में से पांचवां दिन भाई दूज या भाई बीज दिवस के रूप में मनाया जाता है। वैदिक काल के दौरान यम (यमराज, मृत्यु के देवता) अपनी बहन यमुना के पास इसी दिन आए थे। उसने अपनी बहन को एक वरदान (वरदान) दिया कि जो व्यक्ति उस दिन उसके पास जाएगा, वह सभी पापों से मुक्त हो जाएगा और मोक्ष या परम मुक्ति प्राप्त करेगा।

तब से, भाई अपनी बहनों और उनके बच्चों का हालचाल जानने के लिए उनके पास जाते हैं, और बहनें अपने भाइयों के लिए प्यार की निशानी के रूप में मिठाइयां तैयार करती हैं।इस दिन दीपावली पर्व के पांच दिनों का समापन होता है।

महत्वपूर्ण धनतेरस

धन्वन्तरी जब प्रकट हुए थे तो उनके हाथो में अमृत से भरा कलश था। भगवान धन्वन्तरी चूंकि कलश लेकर प्रकट हुए थे इसलिए ही इस अवसर पर बर्तन खरीदने की परम्परा है। कहीं कहीं लोकमान्यता के अनुसार यह भी कहा जाता है कि इस दिन धन (वस्तु) खरीदने से उसमें 13 गुणा वृद्धि होती है।

जिस प्रकार देवी लक्ष्मी सागर मंथन से उत्पन्न हुई थी उसी प्रकार भगवान धनवन्तरि भी अमृत कलश के साथ सागर मंथन से उत्पन्न हुए हैं। देवी लक्ष्मी हालांकि की धन देवी हैं परन्तु उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए आपको स्वस्थ्य और लम्बी आयु भी चाहिए यही कारण है दीपावली दो दिन पहले से ही यानी धनतेरस से ही दीपामालाएं सजने लगती हैं। कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन ही धन्वन्तरि का जन्म हुआ था इसलिए इस तिथि को धनतेरस के नाम से जाना जाता है।

प्रथा

धनतेरस के दिन चांदी खरीदने की भी प्रथा है। अगर सम्भव न हो तो कोइ बर्तन खरीदे। इसके पीछे यह कारण माना जाता है कि यह चन्द्रमा का प्रतीक है जो शीतलता प्रदान करता है और मन में संतोष रूपी धन का वास होता है। संतोष को सबसे बड़ा धन कहा गया है। जिसके पास संतोष है वह स्वस्थ है सुखी है और वही सबसे धनवान है। भगवान धन्वन्तरी जो चिकित्सा के देवता भी हैं उनसे स्वास्थ्य और सेहत की कामना के लिए संतोष रूपी धन से बड़ा कोई धन नहीं है। लोग इस दिन ही दीपावली की रात लक्ष्मी गणेश की पूजा हेतु मूर्ति भी खरीदते हैं। यह दिन व्यापारियों के लिये उत्तम होता है।

कथा

धनतेरस की शाम घर के बाहर मुख्य द्वार पर और आंगन में दीप जलाने की प्रथा भी है। इस प्रथा के पीछे एक लोक कथा है। कथा के अनुसार किसी समय में एक राजा थे जिनका नाम हेम था। दैव कृपा से उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। ज्योंतिषियों ने जब बालक की कुण्डली बनाई तो पता चला कि बालक का विवाह जिस दिन होगा उसके ठीक चार दिन के बाद वह मृत्यु को प्राप्त होगा। राजा इस बात को जानकर बहुत दुखी हुआ और राजकुमार को ऐसी जगह पर भेज दिया जहां किसी स्त्री की परछाई भी न पड़े। दैवयोग से एक दिन एक राजकुमारी उधर से गुजरी और दोनों एक दूसरे को देखकर मोहित हो गये और उन्होंने गन्धर्व विवाह कर लिया। विवाह के पश्चात विधि का विधान सामने आया और विवाह के चार दिन बाद यमदूत उस राजकुमार के प्राण लेने आ पहुंचे। जब यमदूत राजकुमार प्राण ले जा रहे थे उस वक्त नवविवाहिता उसकी पत्नी का विलाप सुनकर उनका हृदय भी द्रवित हो उठा परंतु विधि के अनुसार उन्हें अपना कार्य करना पड़ा। यमराज को जब यमदूत यह कह रहे थे उसी वक्त

उनमें से एक ने यमदेवता से विनती की हे यमराज क्या कोई ऐसा उपाय नहीं है जिससे मनुष्य अकाल मृत्यु के लेख से मुक्त हो जाए। दूत के इस प्रकार अनुरोध करने से यमदेवता बोले हे दूत अकाल मृत्यु तो कर्म की गति है इससे मुक्ति का एक आसान तरीका मैं तुम्हें बताता हूं सो सुनो। कार्तिक कृष्ण पक्ष की रात जो प्राणी मेरे नाम से पूजन करके दीप माला दक्षिण दिशा की ओर भेट करता है उसे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता है। लोग इस दिन घर से बाहर दक्षिण दिशा की ओर दीप जलाकर रखते हैं।

धन्वंतरि

धन्वन्तरि देवताओं के वैद्य हैं और चिकित्सा के देवता माने जाते हैं इसलिए चिकित्सकों के लिए धनतेरस का दिन बहुत ही महत्व पूर्ण होता है। धनतेरस के संदर्भ में एक लोक कथा प्रचलित है कि एक बार यमराज ने यमदूतों से पूछा कि प्राणियों को मृत्यु की गोद में सुलाते समय तुम्हारे मन में कभी दया का भाव नहीं आता क्या। दूतों ने यमदेवता के भय से पहले तो कहा कि वह अपना कर्तव्य निभाते है और उनकी आज्ञा का पालन करते हैं परंतु जब यमदेवता ने दूतों के मन का भय दूर कर दिया तो उन्होंने कहा कि एक बार राजा हेमा के ब्रह्मचारी पुत्र का प्राण लेते समय उसकी नवविवाहिता पत्नी का विलाप सुनकर हमारा हृदय भी पसीज गया लेकिन विधि के विधान के अनुसार हम चाह कर भी कुछ न कर सके। एक दूत ने बातों ही बातों में तब यमराज से प्रश्न किया कि अकाल मृत्यु से बचने का कोई उपाय है क्या। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यम देवता ने कहा कि जो प्राणी धनतेरस की शाम यम के नाम पर दक्षिण दिशा में दीया जलाकर रखता है उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती है। धनतेरस की शाम लोग आँगन में यम देवता के नाम पर दीप जलाकर रखते हैं। इस दिन लोग यम देवता का व्रत भी रखते हैं। इस दिन दीप जलाकर भगवान धन्वन्तरि की पूजा करें। भगवान धन्वन्तरी से स्वास्थ और सेहतमंद बनाये रखने हेतु प्रार्थना करें। चांदी का कोई बर्तन या लक्ष्मी गणेश अंकित चांदी का सिक्का खरीदें।

पूजा सामग्री

रोली, मौली, लौंग, पान, कपूर, अगरबत्ती, चावल, गुड़, धनिया, ऋतुफल, जौ, गेहूं, दूब, पुष्प, चंदन, सिंदूर, दीपक, रूई, नारियल पंचरत्न, यज्ञोपवीत, पंचामृत, शुद्ध जल, सफेद वस्त्र, लक्ष्मी, गणेश की फोटो या मूर्ति, चांदी के सिक्के आदि।

धनतेरस

शनिवार, 22 अक्टूबर

शुभ मुहूर्त

धनतेरस की शुरुआत 10 नवम्बर, शुक्रवार को दोपहर 12 बजकर 34 मिनट पर होगी और 11 नवम्बर, शनिवार को दोपहर 1 बजकर 57 मिनट पर समाप्त होगी। धनतेरस का शुभ मुहूर्त 2 घंटे तक रहेगा। धनतेरस पूजा का शुभ मुहूर्त 10 नवम्बर को शाम 5 बजकर 48 मिनट से 7 बजकर 44 मिनट तक रहेगा। प्रदोष काल का समय 10 नवम्बर को शाम 6 बजकर 2 मिनट से रात 8 बजकर 34 मिनट तक और वृषभ काल का समय शाम 5 बजकर 48 मिनट से रात 7 बजकर 44 मिनट तक रहेगा।

धनतेरस में क्या खरीदें?

धनतेरस का पर्व दिवाली से दो दिन पहले मनाई जाती है, लेकिन इस बार धनतेरस के अगले दिन ही दिवाली मनाई जाएगी। धनतेरस को धनत्रयोदशी भी कहते हैं। इस दिन सोना-चांदी या बर्तन खरीदना बेहद शुभ माना जाता है। धनतेरस पर देवताओं के वैद्य माने जाने वाले भगवान धन्वंतरि और मां लक्ष्मी की पूजा की जाती है। धनतेरस पर लोग इस कामना के साथ नया सामान घर में लाते हैं कि उनके घर में सुख-समृद्धि बनी रहे। हालांकि धनतेरस के दिन सामान खरीदते समय कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि इस दिन कुछ चीजों को खरीदना शुभ नहीं माना जाता है।

- पान के पत्ते मां लक्ष्मी को विशेष रूप से प्रिय माने जाते हैं। इसलिए धनतेरस के दिन पान के 5 पत्ते जरूर खरीदकर लाएं। पान के पत्ते लेकर मां लक्ष्मी को चढ़ाएं और अगले दिन इन पत्तों को दीपावली का त्योहार पूरा हो जाने के बाद आप बहते जल में प्रवाहित कर सकते हैं।
- धनतेरस के दिन गणेश लक्ष्मी की मूर्ति जरूर खरीदें इससे घर में धन संपत्ति का आगमन रहता है और पूरे साल कभी घर में धन की कमी नहीं रहती।
- धातु का सामान जैसे सोना, चांदी व पीतल खरीदना सर्वश्रेष्ठ है। इस दिन ये सब खरीदने से पूरे साल तक घर में लक्ष्मी बनी रहती है।
- स्फटिक का या ताम्बे, अष्टधातु का श्रीयंत्र घर लाने से लक्ष्मी घर की ओर आकर्षित होती है। इसके बाद इस यंत्र की पूजा करने के बाद उसे केशरिया रंग के कपड़े में बांधकर धन स्थान पर रख दें। इससे हमेशा आपके घर में धन बना रहेगा।
- इस मौके पर नई झाड़ू को घर लायें इससे नकारात्मक शक्तियां घर से वापस जाती हैं और लक्ष्मी आपके घर आएंगी।
- कौड़ी को धनतेरस के दिन घर लाकर पूजा कर अपने धन के स्थान पर रखने से आपके घर से कभी लक्ष्मी नहीं जायेगी।
- धनतेरस के दिन शंख लायें और इसे दीपावली पूजन के समय बजायें। इससे घर में लक्ष्मी आती है।
- धनतेरस के दिन नमक का भी काफी महत्व है। कहते हैं कि इस दिन नमक को घर लाना चाहिये व पानी में मिलाकर पोछा लगाने से दरिद्रता चली जाती है।
- धनतेरस के दिन धनिया जरूर लायें। धनिया धन का प्रतीक माना जाता है। इसकी पूजा करके घर के आंगन में या गमलों में इसे रख दें।
- धनतेरस के दिन कुबेर की मूर्ति या तस्वीर लाकर इनकी पूजा करें और धन वाले स्थान पर रखें।

शुभ लाभ

उत्तम चौघड़िया-अमृत, शुभ, लाभ तथा चर है। खराब चौघड़िया- उद्वेग, रोग व काल है।

दिन की चौघड़ियाँ							समय	रात की चौघड़ियाँ						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	दिन-रात	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	6 से 7.30 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	7.30 से 9 तक	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	9 से 10.30 तक	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	10.30 से 12 तक	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	12 से 1.30 तक	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	1.30 से 3 तक	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	3 से 4.30 तक	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	4.30 से 6 तक	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज (अन्नदाता
धनतेरस एवं दीपावली
OGI
OSTWAL
शुभ
अन्नदाता
अन्नदाता का स
किसान का विक
कम खर्चा ज्यादा मुनाफ
श्री गणपति फर्टीलाइजर्स लि. चित्तौड़ (राजस
उत्पादक-ओस्तवाल फॉस्केम (इंडिया) लिमिटेड (भीलवाड़ा) कृष्ण
ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज
रजिस्टर्ड ऑफिस : 5-0-20, आर.सी. व्यास कॉ

की ओर से कृषक दूत के सभी पाठकों को
की हार्दिक शुभकामनाएं

कृषक दूत

लाभ

ाथ
ास

ान)

फास्केम लिमिटेड (मेधनगर) मध्यभारत एग्रो प्रोडक्ट्स लि. (रजौवा एवं बण्डा-सागर)

नी, भीलवाड़ा (राज.) | प्रादेशिक कार्यालय : 127 रचना नगर, भोपाल (म.प्र.) 0755-4061213, मो. : 9425326436

शुभ लाभ

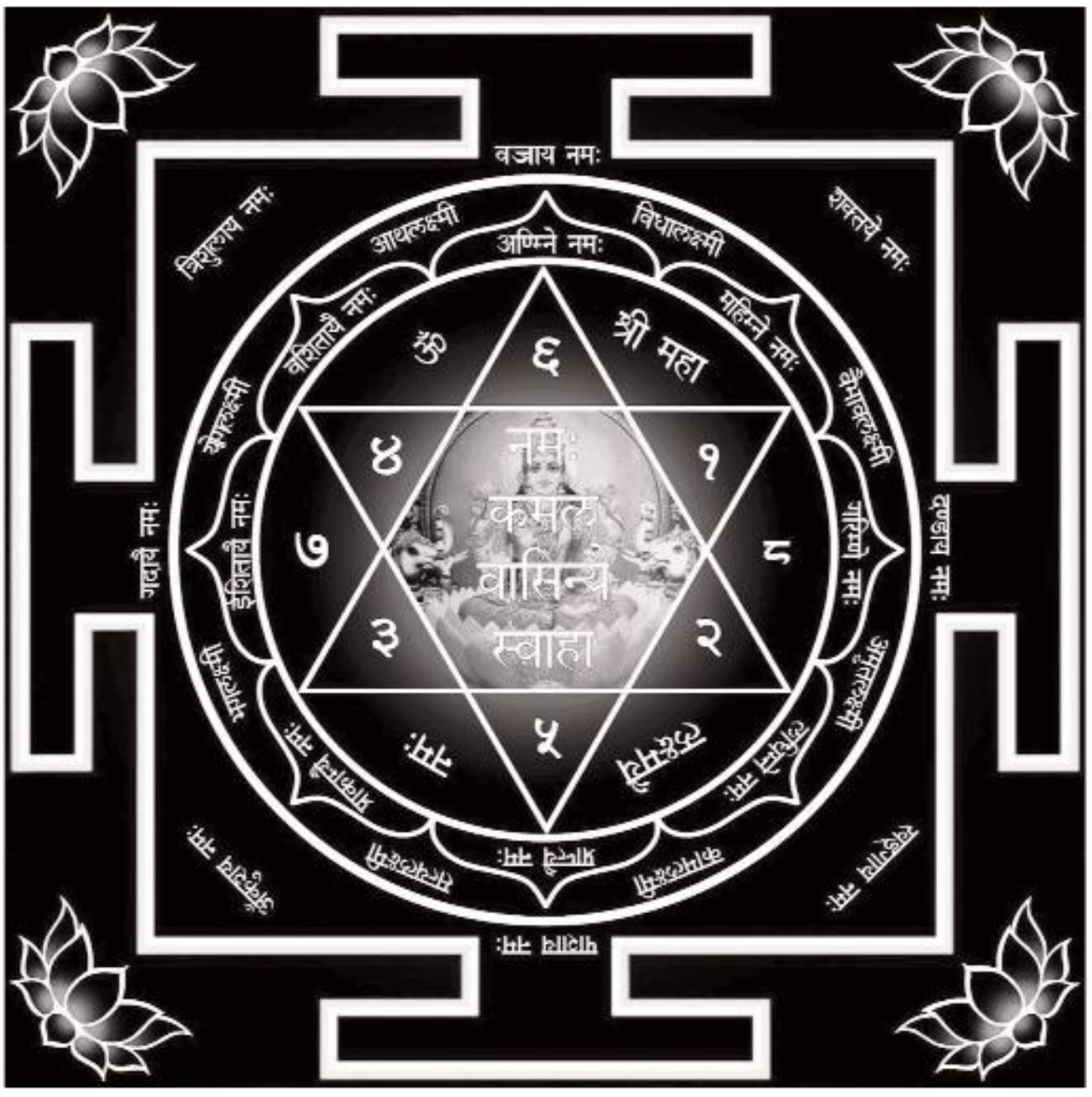
वज्राय नमः
विधालक्ष्मी
आद्यलक्ष्मी
अग्निने नमः
त्रिशुलाय नमः
शक्तये नमः
वशिताये नमः
महिम्ने नमः
योगलक्ष्मी
वैभवलक्ष्मी
ॐ
श्री महा
६
४
१
७
५
३
२
नमः
कमल
वासिन्ये
स्वाहा
गदायै नमः
दण्डाय नमः
ईशिताये नमः
गरिमा नमः
प्रकाम्यलक्ष्मी
प्राप्तिलक्ष्मी
प्राकाम्य नमः
प्राप्ति नमः
ईशित्व नमः
वशित्व नमः
प्रीतिलक्ष्मी
कान्तिलक्ष्मी
प्रीति नमः
कान्ति नमः
अनन्ताय नमः
पद्माय नमः

शुभ लाभ

श्री गणेश पूजा का महत्व

गणपति को बुद्धि के देवता कहा गया है। हिन्दू धर्म में कोई पूजा और कर्मकांड गणपति की पूजा के बिना शुरू नहीं किया जाता। दीपावली पर गणपति पूजा की यह भी एक वजह है। साथ ही धन देवी की पूजा से समृद्धि का आशीर्वाद मिलने के बाद व्यक्ति को सद्बुद्धि की आवश्यकता होती है। ताकि वह धन का उपयोग सही कार्यों के लिये करें। दीपावली कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को मनाई जाती है। जबकि इससे 15 दिन पूर्व कार्तिक मास की पूर्णिमा पर मां लक्ष्मी का जन्मोत्सव शरद पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। शरद पूर्णिमा पर ही देवी लक्ष्मी समुद्र मंथन के दौरान समुद्र से उत्पन्न हुई थीं। हर साल कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को दीपावली का पर्व मनाया जाता है। इस दिन मां काली के साथ देवी लक्ष्मी, सरस्वती, गणपति और देवताओं के कोषाध्यक्ष धुनकुबेर की पूजा की जाती है।

गणपति की मूर्ति खरीदते समय ध्यान रखें

- गणपति की मूर्ति में उनकी सूंड बायें हाथ (आपके बायें हाथ) की तरफ मुड़ी होनी चाहिये और सूंड में दो घुमाव न हों। दाई तरफ मुड़ी हुई गणपति की सूंड शुभ नहीं मानी जाती है।
- ऐसी मूर्ति खरीदें, जिसमें गणेशजी के हाथ में मोदक हों। ऐसी मूर्ति सुख और समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है।
- मूर्ति में गणपति भले ही कमल पर विराजित हों लेकिन उसमें उनके वाहन मूषक की उपस्थिति जरूर होनी चाहिये।
- पीतल, चांदी, सोने या अष्टधातु की मूर्ति खरीदने के साथ ही क्रिस्टल के लक्ष्मी-गणपति की पूजा से घर में सौभाग्य की वर्षा होती है।
- पूजा करते समय गणपति और लक्ष्मी माता की मूर्ति घर की पूर्व दिशा, ईशान या ब्रह्म स्थान (मध्य भाग) में रखें। यहीं बैठकर विधिपूर्वक पूजा करें।

अचूक उपाय अपनाकर लक्ष्मी माता को करें प्रसन्न

दरअसल व्यक्ति की कुंडली में पैदा हुए दोष उसकी नाकामी का कारण बन जाते हैं। अगर आपके जीवन में रोज-रोज नई-नई परेशानियां खड़ी हो रही है तो घबराइये मत हम आपके लिये ज्योतिष का एक ऐसा उपाय लाये हैं, जो आपकी सभी परेशानियों का सफाया कर सकते हैं। तो जानिये क्या है इसका सरल उपाय।

ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसके जीवन में कोई परेशानी न हो। हर किसी की लाइफ में कोई न कोई प्रॉब्लम होती है। परेशानी से बचने के लिये व्यक्ति कई तरह की कोशिशें करते हैं, लेकिन फिर भी वो अपनी समस्याओं से निजात नहीं पाता। तो आपको बता दें कि ऐसा इसलिये क्योंकि उसे उसके जीवन में आने वाली तमाम मुश्किलों का असल कारण पता नहीं होता। दरअसल व्यक्ति की कुंडली में पैदा हुये दोष उसकी नाकामी का कारण बन जाते हैं। तो अगर आपके जीवन में रोज-रोज नई-नई मुश्किलें खड़ी हो रही हैं तो घबराइये मत हम आपके लिये ज्योतिष का एक एसा उपाय लाये हैं जो आपकी सभी परेशानियों का सफाया कर सकते हैं। इतना तो सभी जानते हैं कि हिन्दू धर्म में गाय को माता का रूप माना जाता है। इसी के साथ इनके दूध को बहुत पावन माना जाता है। मान्यता है कि इनके घी से बनी चीजें खासकर दूध और घी को बहुत ही शुद्ध माना जाता है। इसलिये कहा जाता है कि भगवान को घी का दीपक लगाने से वे जल्दी प्रसन्न होते हैं, खासकर देवी लक्ष्मी। तो अगर आप अपने जीवन की सभी मुश्किलों को आसान करना चाहते हैं तो देवी लक्ष्मी के समक्ष गाय के दूध से बने शुद्ध घी का दीपक जलायें। वैसे तो ये उपाय हफ्ते में किसी भी दिन किसी भी समय किया जा सकता है लेकिन अगर यह चमत्कारी उपाय शुक्रवार या दीपावली की रात को किया जाये तो इसका प्रभाव जल्द ही देखने को मिलता है। लेकिन जिस भी दिन आप ये उपाय करें उस दिन कुछ खास बातों का विशेष ध्यान रखें। सबसे पहले शाम तक घर-बाहर के सभी कामों से निवृत्त हो जायें। उसके बाद घर की महिला रात में स्नान करके लाल वस्त्र पहन लें। मंदिर में दुर्गा जी की प्रतिमा या उनके चित्र रखें और घी का दीपक जलाकर दुर्गा सप्तशती का पाठ करें। दीपक जलाते समय अपनी समस्याएं देवी दुर्गा को बतायें। फिर दुर्गा सप्तशती का पाठ करने के बाद माता को घी के बने हलवे या लड्डू का भोग लगायें और दीपक को उठाकर घर के मुख्य दरवाजे के दाहिने हिस्से पर रख दें। ध्यान रहें कि इस उपाय को करने के बाद घर में कोई आना-जाना न करें और बाहरी व्यक्ति इस उपाय को करते हुये आपको देखे नहीं। इस उपाय को करने के अगले दिन दीपक को जल में प्रवाहित कर दें।

नई मूर्ति से करें पूजा

- कई लोग लक्ष्मी-गणेश की नई मूर्ति की पूजा को धर्म से जोड़कर देखते हैं तो कई लोग इसे मंदिर में मूर्ति बदलने का एक अवसर मानते हैं। हालांकि शास्त्रों में सिर्फ पूजा का विधान बताया गया है, नई मूर्ति की पूजा से जुड़ी बातें देखने को नहीं मिलती हैं।
- एक मत यह भी है कि पुराने समय में केवल धातु और मिट्टी की ही मूर्तियों का चलन था। धातु की मूर्ति की उपलब्धता सीमित थी इसलिये ज्यादातर लोग मिट्टी की मूति की ही पूजा करते थे, जो खंडित और बदरंग हो जाती है। इसलिये इस दिन नई मूर्ति लाते थे।
- सामाजिक स्तर पर कुम्हारों की आर्थिक मदद को ध्यान में रखते हुये दीपावली पर नई मूर्ति की पूजा की शुरुआत की गई होगी। इस दिन मिट्टी की पुरानी मूर्ति को बहते हुये जल में प्रवाहित कर देना चाहिये।
- नई मूर्ति एक आध्यात्मिक विचार का भी संचार करती है, जो गीता में श्रीकृष्ण ने उपदेश दिया है। नई मूर्ति लाने से घर में नई ऊर्जा का संचार होता है। यह आत्मा के द्वारा पुराना शरीर छोड़कर नया शरीर धारण कर नई ऊर्जा से ओतप्रोत होने के नियम को बताता है।

दीवाली में कितना महत्वपूर्ण कमल

कीचड़ में खिलने वाला पुष्प कमल भारतीय संस्कृति में सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। इसी पुष्प पर विराजमान लक्ष्मी सौभाग्यदायी है। एक पुरानी मान्यता के अनुसार लक्ष्मी की उत्पत्ति भी कमल पुष्प से मानी गई है, इसीलिए उन्हें पद्मना भी कहा जाता है।

श्रीसूक्त में लक्ष्मी को पद्मिनी, पद्मवर्णा, पद्मा और पद्महस्ता आदि नामों से संबोधित किया जाता है। आदिकाल से ही कमल पुष्प सबका मन मोह लेने वाला रहा है। हमारे धार्मिक ग्रंथों में से पुष्पों का राजा कहा गया है। सिंधुघाटी, मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त अवशेषों व मोहरों पर कमल के चित्र अंकित होना इसकी महत्ता को और अधिक बढ़ा देते हैं। पुपरातात्विक स्तंभों पर भी इस पुष्प का अंकन हुआ है। ऐतिहासिक गुफाओं के भीत्ति चित्रों में इसका प्रयोग स्पष्ट दिखाई देता है। पुरातन प्रतिमाओं में लक्ष्मी और कमल के संबंध को आत्मीयता के साथ दर्शाया गया है। हमारे देश के कवियों ने भी अपनी रचनाओं और काव्यों में कमल का भरपूर वर्णन किया है। संत तुलसीदास ने तो भगवान राम के शारीरिक सौंदर्य को कमल की उपमा से ही अलंकृत किया है।

नव कंज लोचन कंज मुख, कर कंज पद कंजारूणम्

कमल भारतीय धर्म, दर्शन एवं संस्कृति का प्रतीक रहा है। यह मानव जाति को यह संदेश देता है कि मनुष्य को कीचड़ में रहते हुए भी उसमें डूबना नहीं चाहिए। अर्थात् मानव को संसाररूपी मोह-माया और लालच के कीचड़ में रहते हुए भी निस्वार्थभाव से मानव धर्म अपनाते हुए कमल की भांति हमेशा ऊंचे उठे रहना चाहिए। भारतीय भाषाओं में इसे अनेक नामों से जाना जाता है। खिले हुए कमल का सौंदर्य देखकर कोई भी व्यक्ति आकर्षित हुए बिना नहीं रह पाता है। इसी कारण भारतीय देवी-देवताओं ने इसे अपना प्रिय पुष्प बनाया है। भारत के राष्ट्रीय चिन्ह अशोक स्तंभ के शीर्ष में भी कमल का स्वरूप दिखाई देता है।

देवग्रहों में भी कमल की सुंदर आकृतियां अलंकृत की गई है। कीचड़ में खिलने वाला यह पुष्प संसार के सभी धर्मों एवं संस्कृति में आदर प्राप्त है। लक्ष्मी प्रिय होने के कारण हिन्दू धर्म में यह विशेष पूजनीय है।

श्रीयंत्र : सुख और समृद्धि का प्रतीक

श्रीयंत्र के बारे में सभी लोगों ने सुना होगा। यह साक्षात महालक्ष्मी का प्रतीक होता है। प्राचीन युग से ही माना जाता है कि श्रीयंत्र में स्वयं महालक्ष्मी निवास करती है इसलिए यह जहां भी स्थापित होता है वहां अटूट लक्ष्मी का वास होता है। जिस जगह श्रीयंत्र होता है वहां समस्त प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाएं बरसने लगती हैं। इसलिए इस दीपावली आप भी श्रीयंत्र की स्थापना अपने घर और प्रतिष्ठान में करें और सुख-सौभाग्य की प्राप्ति करें। श्रीयंत्र एक विशेष प्रकार का ज्यामितिय नक्शा होता है, जिसका उपयोग प्राचीन काल में विद्वान मनीषियों ने ब्रह्मांड के रहस्य जानने और धन संपदा प्राप्ति के लिए किया। नवचक्रों से बने श्रीयंत्र में चार शिव चक्र, पांच शक्ति चक्र होते हैं। इसमें 43 कोण एक विशेष संयोजन में जमे होते हैं जिनमें 28 मर्म स्थान और 24 संधियां बनती हैं। इसमें तीन रेखाओं के मिलन को मर्म स्थान और दो रेखाओं के मिलन को संधि कहा जाता है। श्रीयंत्र के बारे में कहा जाता है कि यह न केवल देवी की असीमित शक्ति का प्रतीक है, बल्कि यह साक्षात महालक्ष्मी का ज्यामितिय रूप है।

कैसे करें स्थापित

श्रीयंत्र की अधिष्ठात्री देवी स्वयं श्रीविद्या यानी त्रिपुर सुंदरी देवी हैं। यह अत्यंत शक्तिशाली ललितादेवी का पूजा चक्र है और इसे त्रैलोक्य मोहन यंत्र भी कहा जाता है। श्रीयंत्र को अपने घर या प्रतिष्ठान में स्थापित करने के लिए इसे प्रात:काल गंगाजल, कच्चे दूध और पंचगव्यों से धोकर शुद्ध कर लें। इसे लाल रेशमी वस्त्र पर रखें। इसके बाद इस पर चंदन से सात बिंदियां लगाएं। ये सात बिंदी देवी के सप्तरूप का प्रतीक हैं। इस पर लाल गुलाब के पुष्प अर्पित करें और मिश्री का भोग लगाएं।

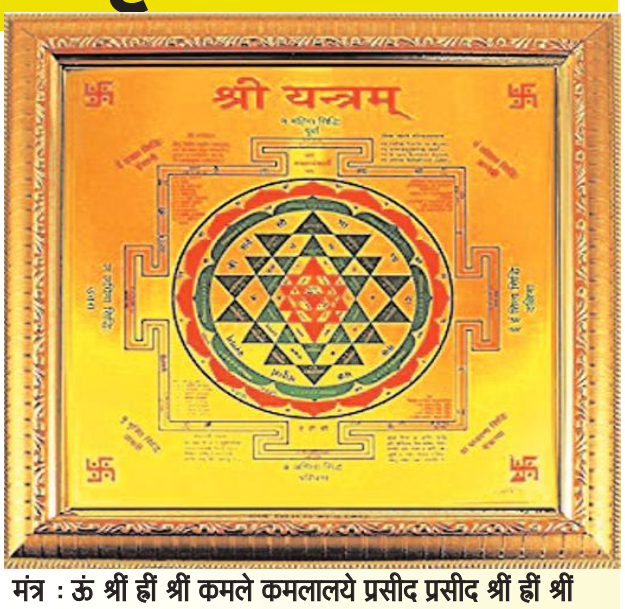

मंत्र : ऊं श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नम:

श्रीयंत्र के लाभ

▶ प्राण प्रतिष्ठित श्रीयंत्र की घर में स्थापना से न केवल उस घर में धन-संपदा बनी रहती है, बल्कि उस घर में निवास करने वाले लोगों के बीच प्रेम बना रहता है। ▶ श्रीयंत्र की स्थापना से समस्त प्रकार के अभावों और रोगों का नाश होता है। ▶ चूंकि यह त्रिपुर सुंदरी देवी का प्रतीक है इसलिए सौंदर्य प्रदाता है। इसकी नियमित पूजा करने से व्यक्ति के सौंदर्य में वृद्धि होती है और उसमें जबर्दस्त आकर्षण प्रभाव पैदा होता है। ▶ व्यापारिक प्रतिष्ठान में श्रीयंत्र की स्थापना से व्यापार-व्यवसाय में लगातार तरक्की होती जाती है।

आतिशबाजी में बरतें सावधानी

दिवाली एक ऐसा त्योहार है जिसको लेकर खासकर बच्चों, किशोरों में खूब उत्साह होता है और वे कई दिन पहले से ही आतिशबाजी शुरू कर देते हैं। त्योहार का आनंद जरूर उठाएं, लेकिन अगर आतिशबाजी करते समय थोड़ी सावधानी बरतेंगे, तो दिवाली का मजा दोगुना हो जाएगा...

- किसी धातु के बर्तन में रखकर पटाखे चलाने से बचें, क्योंकि कई बार मेटल टूटने से घातक चोट लग सकती है। ऐसी घटनाएं हर बार दीपावली में कहीं न कहीं देखने-सुनने को मिल जाती हैं।
- हमेशा लाइसेंसधारी और विश्वसनीय दुकानों से ही पटाखे खरीदें। पटाखों के ऊपर लिखे हुए दिशा-निर्देशों का पालन करें। जिनजन पटाखों से परिचित हैं, उन्हें ही खरीदें। नए पटाखों से सर्वाधिक दुर्घटनाएं होती हैं। बेहतर होगा कि दुकानदार से ही पटाखों को फोडने के बारे में पूछताछ कर लें।
- पटाखे चलाते समय यथासंभव सूती और चुस्त कपडे पहनें।
- बच्चों को अकेले पटाखे नहीं छोडनें दें।
- छोटे बच्चों के हाथ में पटाखे न पकडायें, फुलझडी के गर्म तारों को पानी में रखते जायें, कभी-कभी दौड़ते बच्चों के पांव गरम फुलझडी पर पड़ सकते हैं, इसलिये बच्चों को जूता पहनाकर रखें।
- फुलझडी के अलावा किसी भी पटाखे को हाथ में लेकर न चलायें, खासकर अनार को कभी नहीं। क्योंकि सबसे ज्यादा दुर्घटना अनार में होती है।
- बच्चों को समझायें कि वे पटाखे चलाते समय झुके नहीं अन्यथा पटाखा फटने से उनका चेहरा जल सकता है। बच्चों को हाथ में पटाखा छोड़ने से भी रोकें।
- आतिशबाजी करते समय बडे पात्र में पानी अवश्य रखें, ताकि आवश्यकता पडने पर आग बुझाने के काम आ सके।
- राकेट के लिये बोतल का प्रयोग करें, बोतल में राकेट सीधा खडा करें, ताकि वह सीधा ऊपर जाये।
- घर लाये गये पटाखों को अबोध बच्चों की पहुंच से दूर रखें, क्योंकि इनमें लगे रासायनिक तत्व बच्चों के मुंह में जाने से खतरनाक हो सकता है।
- पटाखे चलाते समय नारियल तेल, बालू, पानी, बरनॉल, कम्बल या रजाई जैसी वस्तु साथ रखें, ताकि किसी तरह की दुर्घटना होने पर तुरन्त काबू पाया जा सके।

- कृतिका नायक
  (रिसर्च स्कॉलर, एग्रोनॉमी विभाग)
- प्रमोद कुमार, प्रक्षेत्र विस्तार अधिकारी
  (शैक्षणिक डेयरी इकाई)
- भूमिका सिंह लोधी,
  प्रक्षेत्र विस्तार अधिकारी
  कृषि महाविद्यालय,
  जा.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर (म.प्र.)

कृषि में आधुनिक प्रौद्योगिकी भारत सरकार की प्रमुख पहलें

भारत में कृषि का महत्व अत्यधिक है और यह देश की सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक पहचान का हिस्सा है। देश की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में रहती है और उनकी मुख्य आजीविका कृषि पर आधारित है। यह न केवल देश की आर्थिक स्थिति में योगदान करता है, बल्कि लाखों लोगों को रोजगार भी प्रदान करता है।

विगत कुछ दशकों में प्रौद्योगिकी के विकास ने कृषि के क्षेत्र में अनेक नई संभावनाओं को उजागर किया है। जहाँ एक ओर पारंपरिक तरीके अब भी महत्वपूर्ण हैं, वहीं आधुनिक प्रौद्योगिकी के उपयोग से कृषि में उत्पादकता, संसाधन प्रबंधन, और गुणवत्ता में वृद्धि हो सकती है। इसके साथ ही, आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करके किसान अब अपनी फसलों की स्थिति की बेहतर निगरानी कर सकते हैं और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों का सामना कर सकते हैं।

आज के समय में प्रौद्योगिकी और कृषि के संयोजन का परिणाम वाणिज्यिक और सांविदानिक रूप में देश के लिए बड़ा लाभ है, और यह दिशा में हमें और आगे बढ़ना है।

आधुनिक प्रौद्योगिकी के प्रकार और उनका महत्व

ड्रोन प्रौद्योगिकी: ड्रोन कृषि में एक नई युग की शुरुआत है। ये छोटे और हल्के हवाई यान है, जो फसलों के ऊपर से उड़ते हैं और उन्हें निगरानी करते हैं। ड्रोनों का उपयोग फसलों की स्थिति, मृदा की गुणवत्ता और सिंचाई की स्थिति की जाँच के लिए होता है। इससे किसानों को अपनी फसलों की वास्तविक स्थिति का पता चलता है और वे उचित निर्णय ले सकते हैं।

सैटेलाइट तकनीक: सैटेलाइट तकनीक का उपयोग भी कृषि में हो रहा है। यह तकनीक विशेष रूप से फसलों की उत्पादकता और वृद्धि की जाँच के लिए होती है। सैटेलाइट छवियों के माध्यम से किसानों को उनकी फसलों की वास्तविक स्थिति, फसल की प्रकार, और मौसमी परिवर्तनों की जानकारी मिलती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कृषि में एक और अद्भुत प्रौद्योगिकी है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीकों का उपयोग मौसम की पूर्वानुमान, फसलों की बीमारियों की पहचान और फसलों की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए होता है।

रोबोटिक्स: रोबोटिक्स भी कृषि के क्षेत्र में एक नई प्रौद्योगिकी है। रोबोटों का उपयोग फसलों की कटाई, बुआई और अन्य कार्यों में होता है। यह तकनीक किसानों के लिए समय और श्रम बचाती है।

सरकारी पहलें और योजनाएँ

कृषि समृद्धि योजना

उद्देश्य: इस योजना का मुख्य उद्देश्य कृषि में नई और उन्नत प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहित करना है।

कार्यवाही: इसके तहत, किसानों को उन्नत प्रौद्योगिकी और उपकरणों की प्रशिक्षण और जानकारी प्रदान की जाती है।

लाभ: यह योजना फसलों की उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार की दिशा में मदद करती है।

डिजिटल कृषि योजना

उद्देश्य: इस योजना का उद्देश्य कृषि को डिजिटल प्लेटफार्म पर लाना है ताकि किसानों को बाजार, मौसम और अन्य महत्वपूर्ण जानकारियों की ताजा जानकारी मिल सके।

कार्यवाही: इसके तहत, किसानों को मोबाइल ऐप्स और डिजिटल प्लेटफार्मों का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

लाभ: यह योजना जानकारी की सही और समय पर पहुंच की दिशा में मदद करती है।

कृषि उन्नति योजना

उद्देश्य: इस योजना का मुख्य उद्देश्य कृषि उत्पादकता और उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार है।

कार्यवाही: इसके तहत, नई और उन्नत तकनीकों के उपयोग की प्रशिक्षण और सहायता प्रदान की जाती है।

लाभ: यह योजना फसलों की उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार की दिशा में मदद करती है।

सौल ग्रिड परियोजना

उद्देश्य: मृदा की गुणवत्ता और उर्वरकता की जांच के लिए।

कार्यवाही: योजना के तहत, मृदा स्वास्थ्य कार्ड जारी किए जाते हैं जो किसानों को मृदा की वास्तविक स्थिति की जानकारी प्रदान करते हैं।

लाभ: किसानों को मृदा की सही जानकारी मिलती है, जिससे वे उर्वरकों और अन्य उपायों का सही तरीके से उपयोग कर सकते हैं।

आधुनिक प्रौद्योगिकी की चुनौतियां

प्रशिक्षण की कमी: आधुनिक प्रौद्योगिकी का सही तरीके से उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। बहुत से किसान अभी भी पारंपरिक तरीकों पर आधारित हैं और उन्हें आधुनिक तकनीकों की जानकारी नहीं है।

उपकरणों की लागत: आधुनिक प्रौद्योगिकी के उपकरण अक्सर महंगे होते हैं, जिससे छोटे और मध्यम आकार के किसान इन उपकरणों को खरीदने में असमर्थ होते हैं।

डिजिटल साक्षरता: भारत में अभी भी कई इलाकों में डिजिटल साक्षरता की कमी है। बहुत से किसान डिजिटल उपकरणों और प्लेटफार्मों का उपयोग कैसे करें, इसकी जानकारी नहीं रखते।

आने वाले समय में प्रौद्योगिकी की भूमिका

जलवायु परिवर्तन: जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले परिवर्तनों को समझने और उस पर प्रतिक्रिया देने के लिए प्रौद्योगिकी की जरूरत होती है। जैसे जलवायु अनुकूलित फसलें, सूखा प्रतिरोधी फसलें आदि।

बाजार की डिजिटल पहुंच: डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से किसान अब अपने उत्पादों को सीधे ग्राहकों तक पहुंचा सकते हैं, जिससे उन्हें अधिक मूल्य मिलता है। अंत में कृषि के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी की भूमिका को देखते हुए, यह स्पष्ट है कि आधुनिक तकनीकों का समावेश न केवल किसानों के लिए बल्कि पूरे देश के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसके सही तरीके से अनुप्रयोग और प्रोत्साहन से हम कृषि क्षेत्र में साझा सपना पूरा कर सकते हैं, जिसमें हर किसान समृद्ध, सशक्त और संपन्न हो।

कमल ककड़ी खाने से शरीर में कई फायदे

- **दीपाली सूर्यवंशी,** असिस्टेंट प्रोफेसर कृषि प्रसार एवं शिक्षा विभाग
- **सतीश कुमार,** असिस्टेंट प्रोफेसर, सस्य विज्ञान विभाग आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर (मप्र.)

कमल-भारत का राष्ट्रीय पुष्प है जिसकी गिनती दुनिया के चुनिंदा खूबसूरत फूलों में की जाती है। कमल ककड़ी के रूप में जाना जाने वाला कमल का तना भारत, जापान और चीन जैसे अन्य एशियाई देशों में सब्जी के रूप में खाया जाता है।

ये फूल जितना देखने में खूबसूरत है इसकी जड़ उतनी ही फायदेमंद है। जी हां, आपने हमें बिल्कुल सही सुना। कमल ककड़ी को स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है। कमल की जड़ को कमल ककड़ी के नाम से जाना जाता है। इसे अंग्रेजी में लोटस रूट्स भी कहा जाता है। कमल ककड़ी को औषधी के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। आमतौर पर कमल ककड़ी को घरों में सब्जी बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसे स्टीम करके, डीप-फ्राई या स्टिर-फ्राई करके खाया जा सकता है। कमल ककड़ी कई प्रकार के आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर होती है जो स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होते हैं। साथ ही खाने में भी अद्भुत स्वाद देती है। कमल ककड़ी में विटामिन-सी, पोटेशियम, फॉस्फोरस, कार्बोहाइड्रेट, स्टार्च, फाइबर, एंटी-ऑक्सीडेंट और एंटी-इंफ्लेमेटरी के गुण पाए जाते हैं, जो शरीर को कई स्वास्थ्य समस्याओं से दूर रखने में मददगार हो सकते हैं। कमल ककड़ी पोषक तत्वों का खजाना है। सेहत के लिए इसे खाना बहुत ही फायदेमंद है और इसका सेवन करने से शरीर के हर अंग को फायदा पहुँचाता है। कमल ककड़ी खाने से शरीर में कई बीमारियों के प्रभाव को कम करने में मदद मिलती है। कमल ककड़ी में भरपूर मात्रा में शरीर को फायदा पहुंचाने वाले विटामिन, मिनरल्स और अन्य पौषक तत्व मिलते हैं जो बीमारियों को दूर करते हैं। कमल ककड़ी के सेवन से शरीर की सूजन को कम किया जा सकता है। विटामिन सी कोलेजन उत्पादन में भी मदद करता है जो स्वस्थ त्वचा, बालों और हड्डियों के लिए बहुत आवश्यक है। कमल के तने में तांबा प्रचुर मात्रा में होता है जो स्वस्थ बालों के लिए बहुत आवश्यक है। इतना ही नहीं ये सुंदरता को भी बढ़ाने में मददगार मानी जाती है। तो चलिए आज हम कमल ककड़ी खाने के फायदों के बारे में बताते हैं। आप अध्ययन को यहां पढ़ सकते हैं जो इसके एंटीऑक्सीडेंट गुणों को साबित करता है।

कमल के तने का पोषण मूल्य

100 ग्राम कमल के तने में लगभग 74 ग्राम कैलोरी, 17 ग्राम कार्ब्स, 2.5 ग्राम प्रोटीन. 5 ग्राम महीन और .1 ग्राम वसा होती है। इसमें जिंक (.39 मिलीग्राम), मैंगनीज (.261 मिलीग्राम), मैग्नीशियम (23 मिलीग्राम), आयरन (1.16 मिलीग्राम), तांबा (25 मिलीग्राम), पोटेशियम (556 मिलीग्राम), सोडियम (40 मिलीग्राम) और विटामिन सी (44 मिलीग्राम)। इसके अलावा, कमल का तना नियासिन, पाइरिडोक्सिन, थायमिन और सेलेनियम से भी भरपूर होता है

कमल ककड़ी खाने के लाभ

सूजन: शरीर में सूजन की समस्या रहती है तो कमल ककड़ी का सेवन आपके लिए फायदेमंद हो सकता है। कमल ककड़ी के मेथेनॉल अर्क को एक प्रभावी एंटी-इंफ्लेमेटरी एजेंट माना गया है, हाथ पैरों में होने वाली सूजन, जोड़ों के दर्द और मांसपेशियों की सूजन में यह आराम दिलाती है। हड्डियों से जुड़े रोगों को यह जड़ से खत्म कर देता है। जो शरीर की सूजन को कम करने में मदद कर सकता है।

दस्त: अगर आपको दस्त की समस्या हो रही है तो आप कमल ककड़ी को डाइट में शामिल कर सकते हैं। कमल ककड़ी में एंटी-डायरिया गुण पाए जाते हैं, जो डायरिया से राहत दिलाने में मदद कर सकते हैं।

डायबिटीज: डायबिटीज रोगियों के लिए फायदेमंद है। कमल ककड़ी का सेवन कमल ककड़ी का इथेनॉल अर्क शरीर में इंसुलिन का प्रभाव बढ़ाकर खून में ग्लूकोज का स्तर कम करने में मदद कर सकता है।

एनीमिया: खून कमी की समस्या है या जिन लोगों के शरीर में आयरन की कमी से पर्याप्त हीमोग्लोबिन नहीं बन पाता, उन्हें कमल ककड़ी का सेवन करना चाहिए। ये शरीर में खून की कमी को दूर करने में मदद कर सकती है।

पिंपल: झुर्रियां, दाग-धब्बों की समस्या से छुटकारा दिलाने में मददगार है कमल ककड़ी का सेवन। कमल ककड़ी में भरपूर मात्रा में विटामिन-सी भी पाया जाता है जो मुंहासों की समस्या से राहत दिलाने में मदद कर सकता है।

तनाव: आज के समय में अधिकांश लोग तनाव की समस्या के शिकार हैं। कमल ककड़ी तनाव को कम करने में सहायक मानी जाती है। इसमें अच्छी मात्रा में पायरोडॉक्सीन पाया जाता है जो तनाव को कम करने में मदद कर सकता है।

कोलेस्ट्रॉल: कमल ककड़ी ब्लड शुगर और कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करने में मदद करती है। इसमें डाइटरी फाइबर होते हैं जो कोलेस्ट्रोल को कंट्रोल करने में मदद कर सकते हैं।

वजन घटाने में करती है मदद: बदलते लाइफस्टाइल के

चलते बहुत से लोग मोटापे का शिकार हो रहे हैं। कमल ककड़ी उन कुछ चीजों में शामिल है जिसे खाने से वजन कम होता है। इसे खाने से पेट भरा रहता है। साथ में कैलोरी भी कम मात्रा में मिलती है। इस वजह से कमल ककड़ी वजन कंट्रोल करने में आपकी काफी मदद कर सकती है।

पाचन में सहायक: कमल ककड़ी में फाइबर की मात्रा बहुत अधिक होती है जो कब्ज जैसी समस्या से बचाता है। इसे खाने से पाचन क्रिया भी दुरुस्त होती है। पेट से जुड़ी समस्याओं को रोकने में कमल ककड़ी खाना बहुत फायदेमंद होता है। ऐसे में अच्छी पाचन क्रिया पाने के लिए कमल ककड़ी खानी चाहिए।

बालों और स्किन के लिए फायदेमंद: कमल ककड़ी में विटामिन सी की भरपूर मात्रा होती है। साथ ही इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट बालों को झड़ने जैसी समस्या से बचाते हैं। इसे खाने से कोलेजन भी बनता है जो स्वस्थ त्वचा, बालों और हड्डियों के लिए आवश्यक है। ऐसे में अच्छी सेहत और बालों के लिए कमल ककड़ी खानी चाहिए।

स्ट्रेस कम करने में सहायक: कमल ककड़ी में विटामिन बी पाया जाता है। विटामिन बी की कमी होने पर चिड़चिड़ापन, कमजोर याददाश्त, तनाव और सिरदर्द जैसी समस्या हो सकती है। ऐसे में चिड़चिड़ेपन से बचने और स्ट्रेस को कम करने के लिए कमल ककड़ी खाई जा सकती है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता: कमल ककड़ी में भरपूर मात्रा में एंटिऑक्सिडेंट होते हैं और इसे खाने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है, वहीं कमल ककड़ी खाने से कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी से बचाव में मदद मिलती है।

ब्लड शुगर का लेवल: इसे खाने से ब्लड शुगर का लेवल भी अनुकूल रहता है। डायबटिक लोगों को रोजाना इसका सेवन करना चाहिए। यह शरीर के ग्लूकोज लेवल में भी सुधार करता है।

भूख: नियमित रूप से कमल ककड़ी खाने से शरीर में कैलोरी की मात्रा भी बराबर रहती है और इसे खाने के बाद काफी देर तक भूख भी नहीं लगती।

ऑक्सीजन का स्तर: कमल ककड़ी खाने से शरीर का ऑक्सीजन का स्तर बढ़ाने में सहायता मिलती और बॉडी का एनर्जी लेवल भी मेंटेन रहता है।

ब्लड सेल्स की कमी नहीं: इसमें भरपूर मात्रा में मौजूद आयरन के कारण शरीर के रेड ब्लड सेल्स की कमी नहीं होती यानी की खून की कमी नहीं रहती है।

विटामिन: कमल ककड़ी में मौजूद विटामिन ए, विटामिन बी और विटामिन सी के एक अच्छे लेवल के कारण शरीर की इम्यूनिटी पॉवर भी डेवलप होती है।

बुखार में तुरंत आराम: किसी व्यक्ति को बुखार होने पर कमल ककड़ी खानी चाहिए। अगर ऐसा कर लिया जाए तो किसी दवाई की जरूरत नहीं पड़ती है और बुखार में तुरंत आराम मिलता है।

त्वचा संबंधी रोग: सर्दियों में कमल ककड़ी खाने से त्वचा संबंधी रोग नहीं होते हैं और त्वचा का फटनास रूखा पड़ना आदी समस्याओं से छुटकारा मिलता है।

पथरी: कमल ककड़ी खाने से शरीर का टाक्सिन दूर होता है और पथरी होने की संभवनाओं पर रोक लगाई जा सकती है।

कब्ज के लिए कमल का तना: कमल के तने में फाइबर बहुत अधिक मात्रा में होता है, आहार फाइबर मात्रा बढ़ाता है और मल को आसानी से पारित करने में मदद करता है। नियमित सेवन से कब्ज से काफी हद तक राहत मिलेगी, यह पाचन स्वास्थ्य को भी बढ़ावा देता है।

बालों और त्वचा के लिए कमल का तना: कमल के तने में विटामिन सी (दैनिक अनुशंसित मूल्य का 70 प्रतिशत से अधिक) बहुत समृद्ध है। विटामिन सी एक अद्भुत एंटीऑक्सीडेंट है जो मुक्त कणों से होने वाले नुकसान को काफी हद तक रोकता है।

कोलेस्ट्रॉल कम करने के लिए: आहारीय फाइबर से भरपूर कोई भी भोजन कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करता है। फाइबर भोजन में वसा के साथ जुड़ जाता है जिससे शरीर में वसा का समग्र अवशोषण बहुत कम हो जाता है। आहार में कमल के तने और केले के तने जैसे फाइबर युक्त खाद्य पदार्थों के नियमित सेवन के साथ-साथ प्रसंस्कृत भोजन में भारी कटौती करने से हमें स्वस्थ रहने में काफी मदद मिलेगी।

वजन घटाने के लिए: फाइबर से भरपूर, कैलोरी में कम और पोषक तत्वों से भरपूर होने के कारणए यह वजन घटाने वाली आहार योजना में शामिल करने के लिए एक आदर्श भोजन है। कमल के तने की सब्जी के साथ साबुत गेहूं की रोटी का सेवन करें और आपका पेट लंबे समय तक भरा रहेगा और बीच में नाश्ता करने की इच्छा भी नहीं होगी। इसमें कैलोरी भी बहुत कम होती है।

कमल का तना और विटामिन बी: कमल का तना वास्तव में विटामिन बी से भरपूर है, विशेष रूप से नियासिन, फोलेट, विटामिन बी 6, थियामिन और पैंटोथेनिक एसिड से भरपूर है, जिनकी कमी से चिड़चिड़ापन, स्मृति हानि, तनाव और सिरदर्द हो सकता है। तनाव कम करने और मानसिक स्पष्टता के लिए हमें नियमित रूप से कमल के तने जैसी विटामिन बी से भरपूर सब्जियों का सेवन करना चाहिए।

रक्तचाप और रक्त शर्करा को नियंत्रित करने के लिए: कमल का तना मधुमेह और उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है क्योंकि यह रक्त शर्करा के स्तर और रक्तचाप दोनों को नियंत्रित करने में मदद करता है। चूंकि इसमें पोटेशियम प्रचुर मात्रा में होता है, इसलिए यह रक्तचाप को बहुत प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में मदद करता है।

कमल के तने के दुष्प्रभाव: कमल के तने में फाइबर की मात्रा बहुत अधिक होती है इसलिए धीरे-धीरे इसकी मात्रा बढ़ाएं ताकि आपके शरीर को फाइबर की आदत हो जाए। यह भी कोशिश करें कि कच्चे कमल के तने न खाएं क्योंकि यह कीचड़ में उगता है, इसलिए इसे अच्छी तरह से साफ करना वाकई मुश्किल होता है और कच्चे कमल के तने खाने से परजीवी संक्रमण होने की संभावना बहुत अधिक होती है। खासतौर पर गर्भवती महिलाओं को कच्चे कमल के डंठल का सेवन नहीं करना चाहिए।

घर पर बनाएं प्राकृतिक कीटनाशक

● मोनिका पटेल ● प्रतिभा यादव
कृषि विस्तार एवं संचार
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

कृषि खेती में कीटनाशकों का उपयोग अवश्यक होता है ताकि हमारी फसलें कीटों से बची रहें, लेकिन विशेषज्ञों ने दिखाया है कि विभिन्न कीटनाशकों का अधिक उपयोग वातावरण और स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा सकता है। इस समस्या का समाधान प्राकृतिक कीटनाशकों का उपयोग करके किया जा सकता है, जो खेती में कीटों के खिलाफ प्रभावी तरीके से जोड़ी जा सकती है।

प्राकृतिक कीटनाशक क्या होते हैं

प्राकृतिक कीटनाशक वे पदार्थ होते हैं जो पौधों की सुरक्षा के लिए उपयोगी होते हैं और वातावरण में कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं डालते हैं। ये सुरक्षित होते हैं और उनके उपयोग से खेती की उपज भी स्वास्थ्यपूर्ण रहती है।

कुछ प्राकृतिक कीटनाशकों की उपयोगी उपाय

नीम का तेल

नीम का तेल एक प्राकृतिक कीटनाशक, पौधों की सुरक्षा के लिए एक अद्वितीय और प्रभावी उपाय है। इसकी खासियत है कि यह कीटों को निष्क्रिय करता है और साथ ही यह पौधों के लिए सुरक्षित है।

नीम के तेल का उपयोग कैसे करें

तैयारी: नीम के पत्ते सूखाकर या नीम के बीजों से तेल निकालकर नीम के तेल की तैयारी करें।

स्प्रे करें: नीम के तेल को पानी के साथ मिलाकर स्प्रे करने के लिए तैयार करें।

पौधों पर स्प्रे करें: इस स्प्रे को पौधों पर बराबर रूप से छिड़कें, खासतर उन जगहों पर जहाँ कीटों की समस्या है।

नीम के तेल और पानी के अनुपात

नीम के तेल और पानी के अनुपात को समझाने के लिए आप नीम के तेल और पानी का मिश्रण या नीम के तेल और पानी का अनुपात के बारे में बात कर सकते हैं। आमतौर पर इस अनुपात को नीम के तेल के प्रति पानी के लिए लिखा जाता है जैसे कि 1:10, जिसका मतलब होता है कि आप 1 हिस्सा नीम के तेल को 10 हिस्से पानी के साथ मिलाएं। इस अनुपात को आप अपनी खेती में उपयोग करने के आवश्यकतानुसार समायोजित कर सकते हैं।

नीम के तेल के फायदे

प्राकृतिक और सुरक्षित: नीम के तेल का उपयोग पौधों की सुरक्षा के लिए प्राकृतिक और सुरक्षित तरीके से की जा सकता है।

कीट प्रबंधन: यह कीटों के खिलाफ प्रभावी है और पौधों की सुरक्षा में मदद करता है।

लहसुन और प्याज

लहसुन और प्याज प्राकृतिक कीटनाशक होते हैं और वे

कृषि में कीटों के खिलाफ उपयोगी हो सकते हैं।

लहसुन

- लहसुन में अल्लिन नामक एक प्राकृतिक उपायक कीटनाशक होता है, जो कीटों को मारने में मदद करता है।
- लहसुन को बुआई जाने से पहले गोंद करके खेत में बोएं ताकि कीटों को भगाने में मदद मिले।

प्याज

- प्याज में भूमि में जीवाणुओं को नष्ट करने वाले अन्तिमांश होते हैं, जिससे खेत की मृदा की स्वास्थ्य बनी रहती है।
- प्याज की पत्तियों को पिसकर पेस्ट बनाएं और उन्हें पौधों पर लगाएं, जो कीटों को दूर रखने में मदद करेगा।

नीम और टमाटर का पेस्ट

नीम और टमाटर का पेस्ट प्राकृतिक कीटनाशक होते हैं और ये कृषि में कीटों के खिलाफउपयोगी हो सकते हैं।

नीम पेस्ट

- नीम पेस्ट नीम की पत्तियों को पीसकर तैयार किया जाता है। नीम में प्राकृतिक कीटनाशक गुण होते हैं जो कीटों को

मारने में मदद करते हैं।
- नीम पेस्ट को पानी में मिलाकर फैलाया जा सकता है और खेत में छिड़कने से पौधों को कीटों से सुरक्षित रखा जा सकता है।

टमाटर का पेस्ट

- टमाटर पेस्ट टमाटरों को पीसकर तैयार किया जाता है और इसमें असिडिक प्रदूषक होते हैं जो कुछ कीटों को मारने में मदद कर सकते हैं।
- टमाटर का पेस्ट पौधों पर लगाने से कीटों को दूर भगाने में मदद मिलती है और इसका बीजों पर प्रभाव डालने से फसलों को कीटों से बचाने में मदद मिल सकती है।
- कृषि में इन प्राकृतिक कीटनाशकों का उपयोग कीटों के खिलाफ बिना हानिकारक रसायनों का उपयोग किए पौधों के स्वास्थ्य को बनाए रखने और फसलों की उत्पादन में मदद करने के लिए एक सांत्वना प्रदान कर सकता है।

नीबू का पेस्ट

नीबू का पेस्ट एक प्राकृतिक कीटनाशक होता है और कृषि में कीटों के खिलाफ उपयोगी हो सकता है।

नीबू का पेस्ट तैयारी

- नीबू के रस को बुआई से पहले या पौधों पर लगाने के लिए तैयार करें।
- नीबू के पेस्ट को बनाने के लिए छोटे टुकड़ों में काट लें या मिक्सर में पीस लें।

नीबू का पेस्ट का उपयोग

- नीबू का पेस्ट कीटों को भगाने में मदद करता है और पौधों को सुरक्षित रखता है।
- इसे पौधों की पत्तियों पर लगाएं या उन्हें पूरे पौधे पर छिड़कें।

तुलसी का पेस्ट

तुलसी का पेस्ट प्राकृतिक कीटनाशक होता है और कृषि में कीटों के खिलाफउपयोगी हो सकता है।

तुलसी का पेस्ट तैयारी

- तुलसी की पत्तियों को पीसकर या कद्दूकस करके पेस्ट तैयार करें।
- पत्तियों को पानी में मिलाकर एक पेस्ट बनाएं।

मेथी और धनिया

मेथी और धनिया प्राकृतिक कीटनाशक होते हैं और कृषि में कीटों के खिलाफ उपयोगी हो सकते हैं।

मेथी : ▶ मेथी के बीजों को पानी में भिगोकर फैलाया जा सकता है और इसे बुआई से पहले खेत में बोएं।

धनिया : ▶ धनिया या कोरिअंडर का पेस्ट बनाने के लिए धनिया के पत्तों को पीसकर तैयार करें। ▶ धनिया में उच्च मात्रा में विटामिन सी और कार्बोहाइड्रेट्स होते हैं, जो कीटों को प्रबंधित करने में मदद कर सकते हैं।

अदरक और मिर्च पेस्ट : अदरक और मिर्च का पेस्ट तैयार करने के लिएए ताजा अदरक और मिर्च को कद्दूकस करके या मिक्सर में पीस लें। इस पेस्ट को पानी में मिलाकर उसका घोल तैयार करें।

बेसिल पेस्ट : बेसिल पेस्ट बनाने के लिए ताजा बेसिल पत्तियों को पीसकर उनमें थोड़ा-सा तेल और नमक मिलाएं। इस पेस्ट को मिक्सर में पीसकर गाढ़ा घोल बनाएं।

पुदीना पेस्ट

पुदीना पेस्ट की तैयारी

सामग्री: ताजा पुदीना पत्तियाँ, पानी और यदि आवश्यक हो थोड़ा सा तेल।

पेस्ट तैयारी : ▶ ताजा पुदीना पत्तियों को साफ करें और पानी में धो लें। ▶ अब पत्तियों को पीस लें ताकि एक गाढ़ा पेस्ट बने। ▶ आपके पसंद के हिसाब से पेस्ट में थोड़ा सा पानी या तेल मिलाएं, जो पेस्ट को बनने में मदद करेगा बने का और उसका उपयोग करना आसान होगा।

(पृष्ठ 6 का शेष)

खेती का एक स्थायी.....

● अजोला क्रमशः कार्बोहाइड्रेट और अमोनिया बनाने के लिए वायुमंडलीय नाइट्रोजन और कार्बन डि ऑक्साइड को ठीक करता है। अपघटन के बादए यह मिट्टी में उपलब्ध नाइट्रोजन जोड़ता है।

फोकस क्षेत्रः छोटे, सीमांत, भूमिहीन और संसाधन-गरीब आदिवासी किसान।

चुनौतियां : रॉकी और वर्षा आधारित क्षेत्र में पशुधन के लिए हरे चारे की उपलब्धता, मोनो-क्रॉपिंग, ज्ञान का बहुत निम्न स्तर/मिट्टी और जल संरक्षण प्रौद्योगिकियों को अपनाना, उच्च निवेश में असमर्थता, संसाधन-गरीब और निर्वाह खेती, पशुधन के लिए हरे चारे की कमी।

विस्तार विधि को अपनाया गया : मिट्टी के स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिएए विभिन्न फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए और गांवों में पोल्ट्री और पशुधन के लिए फीड उपलब्ध कराने के लिए कम लागत वाली अज़ोला खेती संरचना ग्रामीणों (कुमार एट अल) को प्रदर्शित की गई थी (2018)। इस तकनीक में किसानों, पिछवाड़े और खेत में 1X3X0.20 मीटर के गड्ढे को खोदकर एक छोटे से पानी के टैंक का निर्माण किया गया था और एक प्लास्टिक अस्तर के साथ कवर किया गया था। फिर इसे उपजाऊ मिट्टी से ढंका जाता है और एक मोटी परत बनाई जाती है। टैंक को 10 सेमी की ऊंचाई तक पानी से भर दिया गया था और फिर 3-4 किलोग्राम गाय के डंक घोल के साथ मिलाया गया था। टैंक की तैयारी पूरी करने के बाद अजोला की एक छोटी मात्रा को टीका लगाया गया और टैंक में फैल गया। टीकाकरण के 10-15 दिनों के बाद लगभग एक किलो अजोला काटा गया था। प्रभाव और सबक सीखाः कुछ ही समय में यह किसानों के बीच लोकप्रिय हो गया और उन्होंने 37 से अधिक अजोला उत्पादन इकाइयों की स्थापना की। प्रौद्योगिकी के लिए कम निवेश और प्रबंधन की आवश्यकता होती है जिसे स्थापित करना आसान होता है और इसके लिए किसी विशेष विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं होती है। अब किसान पर्याप्त मात्रा में अजोला का उत्पादन कर रहे हैं और अपने मवेशियों, बकरी और मुर्गे को खिला रहे हैं। अधिकांश किसान आर्थिक रूप से कमजोर थे और गुणवत्ता वाले मुर्गे और बकरी का चारा खरीदने में असमर्थ थे। उन्होंने अज़ोला को एक उत्कृष्ट वैकल्पिक फीड के रूप में पाया और इस तरह पोल्ट्री फीड पर 20 प्रतिशत लागत की बचत की। पोल्ट्री शेड के साथ अजोला टैंक का एकीकरण आदिवासी गांवों में एक बहुत अच्छा और सफल मॉडल है (कुमार एट अल, 2018)।

अजोला की खेती करना और खिलाना : अजोला तालाब में संस्कृति को रोकने के लिए 2-3 सप्ताह में कटाई के लिए तैयार है। इसकी पूर्ण वृद्धि के बाद इसे प्रतिदिन काटा जाता है। तालाब की सतह से बायोमास की कटाई के लिए प्लास्टिक के सिस्टर्स का उपयोग किया जा सकता है। औसतन, 4 फीट X6 फीट तालाब के आकार से प्रतिदिन 1 किलो ताजा अजोला कटे हुए अजोला को सीधे या पोषक तत्वों के साथ मिलाया जा सकता है और ताजा अजोला के साथ सफाई के बाद मवेशियों, भेड़, बकरी, सुअर और मुर्गे जैसे पशुओं को खिलाया जा सकता है। डेयरी किसानों को फीड लागत में वृद्धि करके उत्कृष्ट लाभ मिल रहा है और यह भी साबित हो गया है, दूध की उपज में वृद्धि हुई है।

सीमाएं : उच्च गर्मी का तापमान, अत्यधिक कम तापमान, पानी की कमी और कम आर्द्रता, पानी की खराब गुणवत्ता से अजोला की खेती को अपनाना मुश्किल हो जाता है।

अजोला शुष्कता के प्रति संवेदनशील है इसलिए अजोला के मुक्त रूप से तैरने के लिए तालाब में इष्टतम जल स्तर बनाए रखा जाना चाहिए।

मिट्टी के बिस्तर के प्रतिस्थापन तालाब से 6-8 महीने के अजोला उत्पादन के बाद, अजोला के इष्टतम उत्पादन के लिए ताजा अजोला संस्कृति के साथ पानी की आवश्यकता होती है।

अर्थशास्त्र : प्रतिदिन कुल उत्पादन 1.0 किलो प्रति गड्ढे में 365 दिन =366X10/किलो=3650 आय/वर्ष/परिवार उत्पन्न।

निष्कर्ष : अजोला के उत्पादन के लिए कम निवेश और प्रबंधन की आवश्यकता होती है और इसके लिए किसी विशेष विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं होती है। एफएफपी के तहत समर्थित तकनीक, क्षेत्र के कई किसानों के लिए सफल साबित हुई है और महंगे पशुधन और पोल्ट्री फीड के विकल्प के रूप में काम किया है। इस प्रकार बढ़ती जनसंख्या और भूमि कवरेज क्षेत्र को कम करने के कारण अजोला पशुधन की मात्रा और पोषण संबंधी मांग को पूरा करने के लिए एक सर्वोत्तम विकल्प के रूप में कार्य कर सकता है। अजोला पशुधन की विभिन्न किस्मों जैसे सूअर, गोजातीय, मुर्गी, खरगोश, बकरी आदि को खिलाने में एक महान भूमिका निभा सकता है।

यह पशुधन के लिए हरी खाद और प्रोटीन पूरक के सर्वोत्तम वैकल्पिक स्रोत में से एक हो सकता है। यह पशुधन मालिकों विशेष रूप से गरीब सीमांत किसानों के लिए प्रोटीन के सबसे सस्ते स्रोत के रूप में कार्य कर सकता है और उन्हें अपनी आय बढ़ाने में मदद कर सकता है। अजोला को कुछ कृषि उपोत्पाद जैसे चावल की भूसी के साथ जोड़ा जा सकता है, ध्यान केंद्रित करें जो जानवरों की पाचन क्षमता, गुणवत्ता और इसलिए उत्पादन प्रदर्शन में सुधार कर सकते हैं। उपलब्ध साहित्य ने साबित कर दिया है कि अजोला जानवरों की विभिन्न प्रजातियों के लिए एक आर्थिक और कुशल फीड पूरक हैए जिसमें निश्चित मात्रा में प्रोटीन, अमीनो एसिड होते हैं विटामिन और खनिज जो उत्पादन प्रदर्शन को खिलाने और बढ़ाने की लागत को काफी कम करते हैं।

सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।
श्री एल.एल. राय
ब्यूरो चीफ म.प्र.
व्ही.-78 वैष्णव परिसर बागसेवनियां
पोस्ट -बागमुगालिया,
जिला-भोपाल (म.प्र.)
मोबा. 9685491753

सम्पूर्ण उत्तरप्रदेश में कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।
डॉ. शशिकान्त सिंह, ब्यूरो चीफ उ.प्र.
ग्राम- हरिपुर पोस्ट- सुखपुरा
जिला- बलिया, उत्तर प्रदेश
मोबा. 7318214809

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-
कृषक दूत
एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

आवश्यकता है

कृषि एवं ग्रामीण विकास पर केन्द्रित भोपाल से प्रकाशित साप्ताहिक कृषक दूत को क्षेत्रीय प्रसार प्रबंधक (03 पद) की आवश्यकता है। अनुभवी एवं स्नातक व्यक्तियों को प्राथमिकता। कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण मध्यप्रदेश। वेतन योग्यतानुसार, इच्छुक व्यक्ति शीघ्र संपर्क करें।
कृषक दूत
एफ.एम. 16, ब्लॉक सी, मानसरोवर काम्पलेक्स, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-4233824, 9425013875
ई-मेल: krishak_doot@yahoo.co.in

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
● औषधीय ● वन ● सब्जी ● फूल ● बीज ● स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ● कीटनाशक ● जैविक खाद ● गार्डन टूल ● जैविक उत्पाद ● ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध। **वितरक** - ● निर्मल सीड्स, जलगांव ● कलश सीड्स, जालाना ● अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ● दिनाकर सीड्स, गुजरात ● सटिंड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ● स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ● जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ● स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ● अनु प्रोडक्ट्स लि. ● श्री सिद्धि एग्रो केम
112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

अर्जुन इण्डस्ट्रीज
AN ISO 9001:2015 QMS CERTIFIED INDUSTRIES
समस्त कृषि यंत्रों के निर्माता एवं विक्रेता
● ट्राली ● टेंकर ● कल्टीवेटर ● बोनी मशीन ● पल्टीप्लाऊ

लाम्बाखेड़ा ओवरब्रिज, बायपास चौराहा, बैरसिया रोड, भोपाल (म.प्र.)
मो. 9826097991, 9826015664, 9981415744

डेयरी सहकारिता क्षेत्र में सरदार पटेल का अहम योगदान : श्री रूपाला

कृषि भवन से रन फॉर यूनिटी को दिखाई हरी झंडी

नई दिल्ली। केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री परशोत्तम रुपाला ने कृषि भवन के परिसर से रन फॉर यूनिटी को हरी झंडी दिखाई और उसका नेतृत्व भी किया। इस अवसर पर मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री डॉ. संजीव कुमार बालियान और डॉ एल. मुरुगन भी उपस्थित थे।

श्री रुपाला ने कहा कि देश की अखंडता और डेयरी सहकारिता क्षेत्र में सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान को हमेशा याद किया जाएगा और वे हमें लगातार प्रेरित करते रहेंगे। राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर सरदार वल्लभभाई पटेल की 148वीं जयंती के उपलक्ष्य तथा देश की अखंडता में उनके विश्वास को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के 150 से अधिक अधिकारियों ने, पशुपालन और डेयरी विभाग विभाग की सचिव अलका उपाध्याय और सचिव मत्स्य पालन विभाग डॉ. अभिलक्ष लिखी की उपस्थिति में जोश और उत्साह के साथ रन फॉर यूनिटी में भाग लिया। इस दौड़ का आयोजन कृषि भवन के परिसर से राजेंद्र प्रसाद रोड और अशोक रोड होते हुए हैदराबाद हाउस तक किया गया।

रबी फसलों की उन्नत किस्मों का करें उपयोग

रायसेन। कृषि विज्ञान केंद्र, रायसेन एवं मंथन ग्रामीण एवं समाज सेवा समिति, भोपाल के संयुक्त तत्वाधान बायोटेक किसान हब परियोजना अंतर्गत आकांक्षी जिला विदिशा के विकासखंड सिरोंज के कृषकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन कृषि विज्ञान केंद्र, रायसेन में किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख डॉ. स्वप्निल दुबे, डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी, रंजीत सिंह राघव, डॉ. ब्रह्मानंद शुक्ला एवं मंथन संस्थान के भगवान सिंह किरार प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

वैज्ञानिक डॉ. स्वप्निल दुबे द्वारा रबी फसलों की उन्नत किस्म गेहूं की शरबती किस्म एचआई 1531, एचआई 1544, एचआई 1633, एचआई 1634, एचआई 1636 एवं कठिया किस्म एचआई 8759, एचआई 8823, डीबी डब्ल्यू 303, एवं देरी से बुवाई हेतु जीडब्ल्यू 499, एचआई 1634 किस्मों की जानकारी दी। चने की उन्नत किस्म जेजी 24, जेजी 36, आरवीजी 201, आरवीजी 202, आरवीजी 203 एवं मसूर की एचयूएल 57, आईपीएल 316, आईपीएल 319, आरवीएल 30, आरवीएल 31 की जानकारी दी।

वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी द्वारा चना एवं मसूर में बुवाई पूर्व बीज उपचार कार्बन्डाजिम+मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति किलो बीज या कार्बोक्सिन+थायराम 3 ग्राम के साथ ट्राइकोडर्मा वीरिडि 10 ग्राम प्रति किलो बीज उपचार के जानकारी दी गई। वैज्ञानिक रंजीत सिंह राघव द्वारा सिंचित अवस्था में गेहूं के लिए 120 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम स्फुर, 40 किलोग्राम पोटाश व चना एवं मसूर के लिये 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम स्फुर, 20 किलोग्राम पोटाश उपयोग करने की सलाह दी गयी। प्रशिक्षण के बाद कृषकों को विभिन्न प्रदर्शन इकाई का अवलोकन कराया गया। इस कार्यक्रम के आयोजन में मंथन संस्थान के रिसोर्स पर्सन भगवान सिंह किरार का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

गाडरवारा में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री गोपाल प्रसाद गुप्ता
मे. : जी.एम. मेडिकल स्टोर
राधा वल्लभ वार्ड,
गाडरवारा
जिला-नरसिंहपुर

किसानों एवं कृषि क्षेत्र से सम्बद्ध व्यक्तियों के लिए कृषक दूत की अनुपम सौगात...

कृषक दूत
द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी
पुस्तकों पर भारी छूट

सभी पुस्तकों पर
50% छूट
31 दिसम्बर 2023 तक

- मंगाई जाने वाली पुस्तकों का भुगतान अग्रिम रूप से अनिवार्य।
- डाक/कोरियर खर्च अतिरिक्त

50 प्रतिशत छूट योजना का लाभ
स्टाक रहने तक लागू *

पुस्तक का नाम	पुरानी कीमत	छूट के बाद कीमत	पुस्तक का नाम	पुरानी कीमत	छूट के बाद कीमत
रबी फसलों की कृषि कार्यमाला	40/-	20/-	फलों की खेती	50/-	25/-
गेहूं की उन्नत खेती	30/-	15/-	फूलों की खेती	30/-	15/-
दलहनी फसलों की खेती	30/-	15/-	गुलाब की खेती	30/-	15/-
गन्ने की खेती	25/-	13/-	भंडारण के वैज्ञानिक तरीके	30/-	15/-
खरीफ फसलों की खेती	50/-	25/-	मधुमक्खी पालन	150/-	75/-
सोयाबीन की उन्नत खेती	20/-	10/-	पशु पालन	100/-	50/-
धान की उन्नत खेती	100/-	50/-	बकरी पालन	100/-	50/-
कपास की खेती	50/-	25/-	ट्रैक्टर का रखरखाव	50/-	25/-
फसलों में एकीकृत रोग प्रबंधन	250/-	125/-	कृषि यंत्रों का चुनाव एवं रखरखाव	50/-	25/-
जैविक खेती	50/-	25/-	फलों का औषधीय उपयोग	100/-	50/-
वर्मी कम्पोस्ट	30/-	15/-	तिलहनी फसलों की खेती	50/-	25/-
सब्जी उत्पादन की उन्नत तकनीक	150/-	75/-	निर्यात की खेती	30/-	15/-

पुस्तक मंगाने हेतु संपर्क करें :-
कृषक दूत
एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन (0755) 4233824, मोबा. 9425013875, 9300754675, 9827352535
E-mail:krishak doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

महिन्द्रा की ट्रैक्टर बिक्री 2 प्रतिशत घटी

अक्टूबर 23 में महिन्द्रा की ट्रैक्टर बिक्री 49336 रही

मुंबई। ट्रैक्टर उद्योग की अग्रणी कंपनी महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा लिमिटेड ने अक्टूबर 2023 में 49,336 ट्रैक्टर विक्रय किया है। यह बिक्री समान अवधि में पिछले साल की अपेक्षा 2 प्रतिशत कम है। गत वर्ष अक्टूबर में महिन्द्रा ने 50,539 ट्रैक्टर विक्रय किया था। इस दौरान कंपनी ने 1124 ट्रैक्टर का निर्यात किया है। गत वर्ष समान अवधि में 1455 ट्रैक्टर निर्यात किये गये थे। घरेलू बाजार एवं निर्यात को मिलाकर कंपनी ने अक्टूबर 2023 में 50,460 ट्रैक्टर विक्रय किया जबकि गत वर्ष समान अवधि में यह बिक्री 51,994 ट्रैक्टर की रही। कंपनी चालू वित्त वर्ष में अब तक 2,48,060 ट्रैक्टर घरेलू बाजार में विक्रय कर चुकी है। पिछले साल समान अवधि में महिन्द्रा ने 2,52,844 ट्रैक्टर विक्रय किया था। चालू वित्त वर्ष में घरेलू बाजार एवं अन्य देशों को विक्रय किये गये ट्रैक्टर की तुलना में यह बिक्री 3 प्रतिशत कम है।

महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा फार्म इक्वपमेंट सेक्टर के प्रेसीडेन्ट श्री हेमंत सिक्का ने कहा कि खरीफ फसलों के बेहतर उत्पादन एवं त्यौहारी सीजन को देखते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पाह का माहौल है। ऐसी स्थिति में आने वाले महीनों में ट्रैक्टर की मांग बढ़ने की पूरी संभावना है। फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि के कारण किसानों के नकदी प्रवाह में वृद्धि होने से ट्रैक्टर बिक्री को बल मिला है।

छात्रों को जॉब इंटरव्यू के विभिन्न पहलुओं से रूबरू कराने वर्कशॉप आयोजित

जबलपुर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर में छात्रों को जॉब इंटरव्यू के विभिन्न पहलुओं से रूबरू कराने हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में बहुराष्ट्रीय बैंक स्टैण्डर्ड एन्ड चार्टेड बैंगलोर के वाईस प्रेसिडेंट शेराज ने शामिल होकर कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान, जबलपुर के विद्यार्थियों को इंडस्ट्री में जॉब इंटरव्यू के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया। इंटरव्यू में ड्रेस कोड और आत्मविश्वास पर विशेष ध्यान देने पर जोर देने की बात कही, साथ ही स्वयं की नकारात्मकता और सकारात्मकता को प्रस्तुत करने के हुनर को उदाहरण के माध्यम से समझाया। श्री शेराज ने कहा कि हिंदी माध्यम के बच्चे मेहनती होते हैं, परन्तु प्राय: इंटरव्यू में इंग्लिश होने से अपने अंदर का आत्मविश्वास खो देते है, अत: इन बच्चों को आत्मविश्वास से हिंदी में ही इंटरव्यू देने की बात कही। अपनी वास्तविक पहचान को इंटरव्यू के दौरान बनाये रखने की सलाह भी दी गई। इंटरव्यू कक्ष में प्रवेश करने के उपरांत इंटरव्यू पैनल को अभिवादन करना एवं बैठने के संकेत मिलने तक खड़े रहने जैसी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

इसके अलावा यह भी जानकारी दी कि पूछे गए प्रश्नों के उत्तर नहीं आने की परिस्थिति में ईमानदारी से ''नहीं मालूम'' बोलने की हिम्मत दिखाना चाहिए। कार्यशाला में कृषि व्यवसाय प्रबंधन संस्थान, जबलपुर के 50 से अधिक विद्यार्थी शामिल हुये। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन डॉ. दीपक पाल द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में संस्था के निदेशक डॉ. मोनी थॉमस, डॉ. अनुपमा वर्मा, डॉ. नीरज त्रिपाठी, शैक्षणिक प्रभारी डॉ. लवीना शर्मा, लक्ष्मी सिंह, डॉ. दीपक पाल, दीपांशु पटेल एवं लवकेश पटेल ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

सदस्यता फार्म

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824

मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम.....

संस्था का नाम.....

पूरा पता.....

ग्राम.....पोस्ट.....तहसील .....

जिला.....राज्य.....पिन कोड

दूरभाष/कार्या. ..... घर ..... मोबा. : .....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 600/-	■ द्विवार्षिक	: 1100/
■ तृवार्षिक	: 1600/-	■ पंचवर्षीय	: 2600/-
■ दसवर्षीय	: 5100/-	■ आजीवन	: 9100/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र '' कृषक दूत'' की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में).....(शब्दों में).....

बैंक का नाम..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक.....

दिनांक..... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान..... प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक..... एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824

मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें

कृषक दूत

मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16, ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

कम खर्चा ज्यादा मुनाफा

उत्पादक- ओस्तवाल फॉस्केम (इंडिया) लिमिटेड (भीलवाड़ा)। कृष्णा फॉस्केम लिमिटेड (मेघनगर)
मध्यभारत एग्रो प्रोडक्ट्स लिमिटेड (रजौवा एवं बण्डा – सागर)

ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज

रजिस्टर्ड ऑफिस : 5-O-20, आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.)

प्रादेशिक कार्यालय : 127 रचना नगर, भोपाल (म.प्र.) 0755-4061213, मो. : 9425326436

कृषक दूत की सदस्यता लेकर डायरी मुफ्त पायें

अब नये आकर्षक आकार में

कृषक दूत डायरी 2024

नव वर्ष पर मित्रों एवं स्नेहीजनों को भेंट का सर्वोत्तम उपहार

कृषक दूत डायरी 2024 के प्रमुख आकर्षण

- केन्द्र एवं राज्य पोषित विभिन्न कृषि योजनाओं की जानकारी।
- प्रमुख फसलों की कृषि कार्यमाला एवं उन्नत किस्मों की विस्तृत जानकारी।
- तहसील, विकासखण्ड, कृषि उपज मंडियों की सूची।
- प्रत्येक पृष्ठ पर कैलेण्डर तिथि, व्रत एवं त्यौहारों की जानकारी।
- मध्यप्रदेश में कार्यरत कृषि आदान प्रदायक कंपनियों की सूची।

कीमत 225/- रु. मात्र

संपर्क करें ➡ कृषक दूत

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824 मो. : 9425013875, 9300754675, 9827352535
Email:- krishak_doot@yahoo.co.in, Website : www.krishakdoot.org

आर.एन.आई. नं. एम.पी.एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्रं. एम.पी./भोपाल/625/2021-23, कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:-krishak_doot@yahoo.co.in (डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार)